PURE HERBAL PRODUCTS FROM THE HEART OF INDIA

Vindhya Herbals

विन्ध्य हर्बल्स उत्पाद श्रृंखला

लघु वनोपज प्रसंस्करण एवं अनुसंधान केन्द्र
(एम.एफ.पी.-पार्क), बरखेड़ा पठानी, भोपाल
फोन नं. : 0755-2417670, फैक्स नं. : 0755-2417670
E-mail:mfp_parc@rediffmail.com, Website : www.vindhyaherbals.com

उत्पाद सूची

प्रदेश के लाखों आदिवासियों एवं अन्य वनवासियों के साथ भारत वर्ष के हृदय स्थल में स्थित मध्यप्रदेश देश का अति समृद्धशाली वानस्पतिक क्षेत्र है। यहां के वनों तथा खेतों में कई प्रकार की जड़ी-बूटियां उत्पादित होती हैं। हर्बल उत्पादों की बढ़ती हुई मांग एवं महत्व को देखते हुये इन सबको सही समय पर संग्रहित कर उन्हें पूर्ण स्वच्छ एवं शुद्ध रूप में प्रसंस्कृत कर विभिन्न आयुर्वेदिक दवाईयों के रूप में आपके समक्ष प्रस्तुत करने का दायित्व वर्ष 1984 से सहकारी क्षेत्र में कार्यरत मध्यप्रदेश राज्य लघु वनोपज (विपणन एवं विकास) सहकारी संघ ने लिया है। लघु वनोपज संघ प्रदेश के वनांचलों में गठित 1066 प्राथमिक वनोपज सहकारी समितियों तथा 60 जिला सहकारी वनोपज यूनियनों की शीर्ष संस्था है।

हर्बल वनस्पति के उत्पादों के प्रसंस्करण एवं परीक्षण के लिये मध्यप्रदेश राज्य लघु वनोपज सहकारी संघ, भोपाल इकाई के रूप में लघु वनोपज प्रसंस्करण एवं अनुसंधान केन्द्र, बरखेड़ा पठानी, भोपाल में कार्यरत है। इस प्रसंस्करण केन्द्र में विन्ध्य हर्बल्स उत्पाद श्रृंखला के तहत् ''हमारा नाम ही शुद्धता की गारन्टी है'' की भावना के साथ शास्त्रोक्त एवं पेटेन्ट आयुर्वेदिक दवाईयों का निर्माण किया जा रहा है। ''विन्ध्य हर्बल्स'' मध्यप्रदेश के प्राकृतिक जंगलों से एकत्रित किये हुये जड़ी-बूटियों का केन्द्र में स्थित उच्च गुणवत्ता प्रयोगशाला में परीक्षण कर एवं प्रसंस्कृत कर बाजार में प्रस्तुत किया गया है। मध्यप्रदेश के वन अंचलों से प्राप्त नेचुरल शहद को प्रसंस्कृत कर एग्मार्क गुणवत्ता अनुसार शुद्ध शहद बाजार में प्रस्तुत किया गया है।

विन्ध्य हर्बल्स का कार्य क्षेत्र

- गुणवत्ता नियंत्रण एवं मानकों का विकास।
- अकाष्ठीय वनोपजों की प्रसंस्करण तकनीकों का विकास।
- शहद एवं हर्बल उत्पादों का प्रसंस्करण एवं विपणन।
- अकाष्ठीय वनोपजों एवं उसके उत्पादों के विपणन हेतु सहायता।
- हमारी समृद्ध जैव संपदा के संबंध में जागरूकता फैलाना।

Caution : To be taken under Medical Supervision

Produced in a GMP & ISO 9001:2008 Certified Unit

एम.एफ.पी.-पार्क की अनोखी विशेषतायें

- एक सफल एवं वृहद्तम सहकारी संस्था का उपक्रम।
- सभी उत्पादों की ऑर्गेनिक प्रकृति।
- स्वयं की उन्नत प्रयोगशाला द्वारा कच्चे माल एवं उत्पादों का गुणवत्ता परीक्षण।
- ग्राम स्तर की प्राथमिक वनोपज सहकारी समितियों के माध्यम से मुख्यत: कच्ची जड़ी-बूटियों का संग्रहण।
- अच्छी निर्माण प्रथाएं (जी.एम.पी.) प्रमाणीकृत संस्था।
- आई.एस.ओ. 9001 : 2008 प्रमाणीकृत संस्था।
- जड़ी-बूटियों के संग्राहकों, किसानों को जागरूक करने के उद्धेश्य से प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन।
- कृषकों को औषधीय एवं सुगंधीय पौधों की कृषि तकनीकों से परिचय कराने के लिये प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन।

Manufactured By :- MFP PARC, Barkheda Pathani, BHOPAL-4620021
Consumer Care Cell-Tel : 0755-2417670
e-mail : mfp_parc@rediffmail.com, mfpparc@gmail.com

Marketed By :-M.P.State Minor Forest Produce
Co-operative Federation Ltd.
Khel Parisar, Indira Nikunj, 74-Bungalows, Bhopal-462003 India
e-mail : mdmfpfederation@sancharnet.in

Online Purchase Website : www.vindhyaherbalsonlinestore.com

उत्पाद सूची

क्र.	बार कोड	उत्पाद का नाम	शामिल घटक	रोग जिस पर प्रभावकारी	उपयोग विधि
			शास्त्रोक्त एकल हर्बल चूर्ण		
1	0001	अडूसा पत्ती चूर्ण	अडूसा पत्ती	श्वास, कास, प्रमेह रोगों में लाभकारी एवं श्वसन संबंधी विकारों में लाभकारी।	3–6 ग्राम सुबह–शाम शहद के साथ।
2	0002	अनन्तामूल चूर्ण	अनन्तामूल जड़	मूत्र विरेचन, श्वासनली को साफ करता है, पाचन क्षमता मे वृद्धि, रक्त शोधक तथा कुष्ठ, आमवात रोग को नष्ट करता है।	1–3 ग्राम सुबह–शाम शहद या दूध के साथ।
3	0003	आंवला चूर्ण	आंवला फल	अम्ल–पित्त, नेत्र रोग, रक्त स्त्राव, प्रमेह, पाचन–क्रिया में लाभकारी तथा विटामिन सी से भरपूर रसायन।	3–6 ग्राम सुबह–शाम पानी से।
4	0004	अपामार्ग चूर्ण	अपामार्ग (चिरचिटा) पंचांग	त्वचा रोग, बबासीर, उदररोग, शूल, अपच, वात रोग, कुष्ठहर, ज्वरहर आदि रोगों को नष्ट करता है।	3–6 ग्राम सुबह–शाम गुनगुने पानी से।
5	0005	**अर्जुन छाल चूर्ण**	अर्जुन (कोहा) छाल	हृदय रोग, प्रमेह, यकृत रोगों में लाभकारी होता है तथा अस्थिसंधानक है।	3–6 ग्राम सुबह–शाम पानी या दूध के साथ।
6	0006	अशोक छाल चूर्ण	अशोक छाल	प्रदर एवं गर्भाशय की शिथिलता, अतिसार आदि रोगों में लाभकारी होता है।	3–6 ग्राम सुबह–शाम दूध या चावल के धोवन के साथ।
7	0007	**अश्वगंधा चूर्ण**	अश्वगंधा जड़	कफ वात, बाजीकर, संधिवात, तनाव, क्षय, बलदायक, वात रोग में लाभकारी होता है तथा उत्तम पौष्टिक है।	3–6 ग्राम सुबह–शाम दूध के साथ भोजन उपरान्त।
8	0008	बेल गूदा चूर्ण	बेल फल	अर्श, संग्रहणी, अतिसार, वमन आदि रोगों में लाभकारी होता है।	3–6 ग्राम सुबह–शाम जल से।
9	0009	बहेड़ा चूर्ण	बहेड़ा छिलका	खांसी, गले के रोग (थायराईड) , ज्वर, प्लीहावृद्धि, अतिसार में लाभकारी होता है।	3–6 ग्राम सुबह–शाम शहद या जल से।
10	0010	बावची चूर्ण	बावची बीज	चर्म रोग, कुष्ठ में उपयोगी।	3–6 ग्राम सुबह–शाम जल से।
11	0011	भृंगराज चूर्ण	भृंगराज पंचांग	बालों का झड़ना, यकृत संबंधी विकार, नेत्र रोगों में उपयोगी।	3–6 ग्राम सुबह–शाम जल से।
12	0012	भुई आंवला चूर्ण	भुई आंवला पंचांग	ज्वरहर, यकृत रोग, कफ, मूत्ररोग, पीलिया, पाण्डु आदि रोगों को नष्ट करता है।	3–6 ग्राम भोजन पूर्व जल से।
13	0013	चन्द्रशूर बीज चूर्ण	चन्द्रशूर बीज	थॉयराइड, अतिसार, वातशामक, गर्भाशय संकोचक, संग्रहणी में लाभकारी होता है तथा बचपन में ऊंचाई बढ़ाने में सहायक।	1–3 ग्राम शक्कर एवं नारियल पानी से।
14	0014	चित्रक मूल चूर्ण	चित्रक मूल	अपचन, पेट का फूलना, दीपन, पाचन, अर्श, ग्रहणी एवं वात रोग को नष्ट करता है।	1–2 ग्राम सुबह–शाम शहद या जल से।
15	0015	दारू हल्दी चूर्ण	दारू हल्दी	ज्वर, कफ एवं पित्तविकारों, गर्भाशय की सूजन, श्वेत प्रदर एवं रक्तप्रदर पर उपयोगी।	3–5 ग्राम सुबह–शाम जल के साथ।
16	0016	देवदारू चूर्ण	देवदारू	रक्त प्रदर, रक्तार्श रोग में लाभकारी होता है।	3–5 ग्राम सुबह–शाम पानी से।

क्र.	बार कोड	उत्पाद का नाम	शामिल घटक	रोग जिस पर प्रभावकारी	उपयोग विधि
17	0017	**गिलोय चूर्ण**	गिलोय तना	प्रमेह, श्वास, वातरोग, एवं ज्वरहर तथा रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है।	3–6 ग्राम सुबह– शाम शहद या पानी से।
18	0018	गोखरू चूर्ण	गोखरू फल	मूत्रविरेचक, धातु रोग, वातरोग, किडनी रोग आदि में लाभकारी होता हैं।	3–6 ग्राम सुबह–शाम।
19	0019	गोरखमुंडी चूर्ण	गोरखमुंडी	आमपाचक, रक्त पित्त, रक्तदोष में लाभकारी होता है तथा बाजीकर है।	1–3 ग्राम सुबह–शाम पानी के साथ।
20	0020	गुड़मार पत्ती चूर्ण	गुड़मार पत्ती	प्रमेह, कुष्ठ, कास, मधुमेह, उदररोग में लाभकारी होता है।	1–3 ग्राम सुबह–शाम जल के साथ।
21	0021	गुलाब फूल चूर्ण	गुलाब फूल	पौष्टिक, पाचक, रक्त–शोधक एवं हृदय को शक्ति प्रदान करने वाला होता है।	2 से 3 ग्राम सुबह–शाम पानी अथवा दूध के साथ।
22	0022	गूलर छाल चूर्ण	गूलर छाल	रक्त प्रदर, मासिक स्त्राव की अधिकता, रक्तार्श, रक्तपित्त, प्रमेह, मधुमेह आदि में लाभकारी होता है।	6 से 10 ग्राम पानी के साथ अथवा क्वाथ बनाकर।
23	0023	हरड़ चूर्ण	हरड़ फल	रसायन, नेत्ररोग, जीर्ण ज्वर, अतिसार, अर्श, अजीर्ण, प्रमेह आदि रोग में लाभकारी होता है।	3–6 ग्राम सुबह–शाम।
24	0024	हरसिंगार पत्ती चूर्ण	हरसिंगार पत्ती	कटिवात, कफ, वात को कम करने वाला एवं सायटिका रोग को नष्ट करने वाला होता है।	3–6 ग्राम पानी व शहद से सुबह–शाम।
25	0025	इन्द्र जौ चूर्ण	इन्द्र जौ फल	अतिसार, संग्रहणी, अर्श में लाभकारी होता है।	1–3 ग्राम सुबह–शाम जल के साथ।
26	0026	जामुन गुठली चूर्ण	जामुन गुठली	मधुमेह (डायबिटीज), प्रदर रोग को नष्ट करने वाला होता है।	1–3 ग्राम सुबह–शाम जल के साथ ।
27	0027	जटामांसी चूर्ण	जटामांसी कंद	मस्तिष्क व नाड़ी तंत्र में अत्यन्त उपयोगी होता है।	चिकित्सक के परामर्श अनुसार।
28	0028	कबाबचीनी चूर्ण	कबाबचीनी फल	दीपन पाचन, अग्निमांद्य, अर्श, कास–श्वास रोग को नष्ट करने वाला होता है।	1–3 ग्राम सुबह–शाम जल के साथ ।
29	0029	कायफल चूर्ण	कायफल छाल	सूजन को कम करने, कफ को निकालने, भूख बढ़ाने एवं वातरोगों पर असरकारक, प्रमेह रोग में लाभकारी होता है ।	3 से 5 ग्राम शहद अथवा पानी के साथ।
30	0030	काली मिर्च चूर्ण	काली मिर्च फल	भूख की कमी, कफ रोगों, कास, श्वासहर एवं आमपाचक होता है।	1/2 से 1 ग्राम सुबह–शाम पानी के साथ।
31	0031	काली मूसली चूर्ण	काली मूसली जड़	वीर्यवर्धक, शक्तिवर्धक आदि रोग में लाभकारी होता है।	3–6 ग्राम सुबह–शाम दूध के साथ ।
32	0032	कालमेघ पंचांग चूर्ण	कालमेघ पंचांग	मलेरिया, विषम ज्वर, यकृत रोग, पाण्डुरोग, कामला, प्लीहावृद्धि आदि रोगों में अत्यन्त लाभकारी होता है।	3–6 ग्राम सुबह–शाम दूध या जल के साथ ।
33	0033	करंज छाल चूर्ण	करंज छाल	चर्म रोग, गठियावात आदि में लाभकारी होता है।	1–3 ग्राम पानी या दूध के साथ दिन में दो बार।
34	0034	कटसरैया चूर्ण	कटसरैया	यकृतरोग, पिंडली में दर्द, वातरोग, कटिवात आदि में अत्यन्त लाभकारी होता है।	3–5 ग्राम सुबह–शाम जल के साथ।
35	0035	केवटी छाल चूर्ण	केवटी छाल	प्रमेह, मधुमेह, बल्य, प्रदर आदि में लाभकारी होता है।	3–5 ग्राम सुबह–शाम जल के साथ।
36	0036	खरेटी चूर्ण	खरेटी पंचांग	मूत्र रोग, श्वेत प्रदर, वातव्याधि, सर्वांगवात आदि रोग में लाभदायक है।	3–6 ग्राम सुबह–शाम दूध/पानी के साथ।

To be taken under Medical Supervision

क्र.	बार कोड	उत्पाद का नाम	शामिल घटक	रोग जिस पर प्रभावकारी	उपयोग विधि
37	0037	किंवाच बीज चूर्ण (शोधित)	किंवाच बीज	पौष्टिक, मूत्रजनक, शुक्रल, वाजीकरण, कंपवात, वातरोग, बल्यवर्धक होता है।	3 से 5 ग्राम दूध के साथ सुबह–शाम।
38	0038	कुड़ा छाल चूर्ण	कुड़ा छाल	अतिसार, संग्रहणी, रक्तपित्त, त्वचारोग, पित्तविकार एवं पाचक, पित्त को शांत करने वाला होता है।	3 से 5 ग्राम सुबह–शाम जल के साथ एवं काढ़ा बनाकर।
39	0039	कुटकी चूर्ण	कुटकी	यकृत एवं प्लीहा, तथा आंत पर प्रभावकारी, मलभेदक, हृदय को हितकर, प्रमेह, ज्वर में लाभकारी होता है।	500 मि.ग्रा. से 1 ग्राम सुबह शाम जल के साथ।
40	0040	महानीम छाल चूर्ण	महानीम छाल	श्वेत प्रदर, गठिया, आदि रोग में लाभकारी होता है।	1–5 ग्राम जल के साथ।
41	0041	माजूफल चूर्ण	माजूफल	बवासीर, अतिसार, मुख शोधक, मुखपाक में लाभकारी होता है।	500 मि.ग्रा. से 1 ग्राम सुबह शाम जल के साथ।
42	0042	मकोय चूर्ण	मकोय पंचांग	पाण्डु रोग में तथा इसका प्रयोग शोथ, कुष्ठ, नेत्र रोग, हृदय रोग, अर्श एवं ज्वर में लाभदायक होता है।	3 से 5 ग्राम सुबह–शाम दूध या जल के साथ।
43	0043	मंजिष्ठ चूर्ण	मंजिष्ठ	रक्तशोधक, पाचक, त्वचा रोगों में लाभकारी तथा मुहासों में प्रभावकारी होता है।	3–5 ग्राम दूध या जल के साथ।
44	0044	**मुलैठी चूर्ण**	मुलैठी जड़	कास, बल्य, मूत्रजनक, शोथहर, रसायन होता है तथा अम्लपित्त में लाभकारी होता है।	3–6 ग्राम सुबह–शाम पानी या शहद के साथ।
45	0045	नागरमोथा चूर्ण	नागरमोथा कंद	कफ, हृदय रोग, अतिसार, बालों को धोने, आंव, दस्त, पेट रोग, मूत्ररोग आदि में लाभकारी होता है।	3–6 ग्राम जल के साथ।
46	0046	नागकेशर चूर्ण	पुंकेशर	रक्तस्तम्भक, ज्वरहर, अर्शाघ्न, मूत्रल और गर्भ स्थापक।	1–3 ग्राम मक्खन के साथ।
47	0047	नीम पत्ती चूर्ण	नीम पत्र	त्वचा रोग, नेत्र रोग, यकृत रोग, ज्वरहर, रक्तशोधक आदि में लाभकारी होता है।	3–6 ग्राम सुबह–शाम जल या शहद के साथ।
48	0048	निर्गुण्डी चूर्ण	निर्गुण्डी पत्र	शूल, शोथ, आमवात, चर्मरोग, कुष्ठ, कफ ज्वर, नेत्ररोग में अत्यन्त लाभकारी होता हैं	3–5 ग्राम सुबह–शाम जल के साथ।
49	0049	पाषाणभेद चूर्ण	पाषाणभेद	शोथहर, मूत्रल एवं पथरी रोग में प्रभावकारी होता है।	3–5 ग्राम जल के साथ सुबह–शाम।
50	0050	पठानी लोध चूर्ण	पठानी लोध	बवासीर, यकृत, श्वेत प्रदर, रक्त विकार, मासिक धर्म में अधिक रक्तस्त्राव में लाभकारी होता है।	1–3 ग्रा. सुबह– शाम पानी के साथ/चावल के धोवन के साथ।
51	0051	पिप्पली चूर्ण	पिप्पली फल	पाचक, पेट दर्द, श्वांस, खांसी आदि में लाभकारी होता है।	1/2 ग्रा. से 1 ग्राम शहद/पानी से सुबह–शाम
52	0052	पिपरामूल चूर्ण	पिपरा मूल	कास, श्वास, भूख को बढ़ाने वाला, आमपाचक एवं पेट के रोगों पर असरकारक होता है।	1–3 ग्राम शहद अथवा जल के साथ।
53	0053	पुआड़ बीज (चक्रमर्द) चूर्ण	पुआड़ बीज (चक्रमर्द)	त्वचारोग, वातरोग, कुष्ठ आदि को नष्ट करने वाला होता है।	1 से 3 ग्राम जल एवं दूध व तैलीय पेस्ट बनाकर लगाना।
54	0054	पुनर्नवा मूल चूर्ण	पुनर्नवा जड़	शोथ, उदर रोग, कामला, पाण्डु, विषविकार, मूत्रविकार में लाभकारी होता है।	3–6 ग्राम सुबह–शाम जल से।

क्र.	बार कोड	उत्पाद का नाम	शामिल घटक	रोग जिस पर प्रभावकारी	उपयोग विधि
55	0055	रास्ना पत्ती चूर्ण	रास्ना पत्ती	ज्वर, कफ, श्वासनली की सूजन, वात रोग आदि में लाभकारी होता है।	3 से 6 ग्राम जल के साथ सुबह शाम।
56	0056	**सफेद मूसली चूर्ण**	सफेद मूसली कंद	पुष्टिकारक, वातरोग नाशक, शक्तिवर्धक तथा रसायन होता है।	3–6 ग्रा. सुबह–शाम दूध से भोजन उपरान्त।
57	0057	सनाय पत्ती चूर्ण	सनाय पत्ती	कब्जीयत, उदर रोग में अत्यन्त लाभकारी होता हैं।	1–3 ग्रा. मुनक्का या जल के साथ भोजन उपरांत।
58	0058	सर्पगंधा चूर्ण	सर्पगंधा मूल	उन्माद, उच्च रक्त चाप, हृदय रोग, अनिद्रा में लाभकारी होता है।	रक्तचाप के लिए 1–2 ग्रा. व निद्राजनन के लिए 3–6 ग्रा. दूध या जल के साथ।
59	0059	सरपोंखा चूर्ण	सरपोंखा मूल	विषमज्वर, कफ, श्वास रोग, प्लीहा, बवासीर में प्रभावकारी होता है।	3–5 ग्राम दिन में दो बार जल से।
60	0060	सौंठ चूर्ण	सौंठ कंद	सर्दी–खांसी, आमपाचक, पेट में वायु से होने वाला दर्द, जोडों का दर्द, रक्तपित में लाभकारी।	1/2 से 1 ग्राम दिन में दो बार जल से।
61	0061	**शतावर चूर्ण**	शतावरी कंद	स्तन्यवर्धक, श्वेत प्रदर, शुक्र दौर्बल्य आदि में लाभकारी होता है।	3–6 ग्रा. सुबह–शाम दूध से भोजन उपरान्त।
62	0062	**शिलाजीत चूर्ण**	शिलाजीत	योगवाही, प्रमेह, पौरूष शक्तिवर्द्धक, मूत्रविकार, क्षय, पथरी, पाण्डु में अत्यन्त लाभकारी होता है।	250–500 मि.ग्रा. दूध के साथ।
63	0063	तुलसी पत्ती चूर्ण	तुलसी पत्ती	कफ, कास, श्वास, प्रतिश्याय, अरूचि रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है, विषमज्वर, कास रोग को नष्ट करता है।	3–5 ग्रा. सुबह–शाम शहद से।
64	0064	वच चूर्ण	वच कंद	स्वरभेद, कफ–निःसारक, पाचक, विषम ज्वर, अपस्मार में अत्यन्त लाभकारी होता है।	500 मि.ग्रा. से 1 ग्राम शहद से सुबह–शाम।
65	0065	वायबिडंग चूर्ण	वायबिडंग बीज	यह उत्तम कृमिघ्न, वातहर, दीपन, पाचक, वातनाड़ी संस्थान के लिए बल्य, रक्तशोधक एवं कृमिनाशक होता है ।	5–10 ग्रा. भोजन उपरान्त शहद या मठ्ठे के साथ।
66	0066	विदारीकंद चूर्ण	विदारी कंद	धातुरोग, शक्तिवर्धक, पुष्टिकारक एवं रसायन होता है।	3 से 6 ग्राम सुबह–शाम दूध से।
67	0067	विधारा मूल चूर्ण	विधारा मूल	क्षयरोग, शरीर की दुर्बलता, रसायन वातनाशक, आमवात में उपयोगी होता है।	3 से 6 ग्राम सुबह–शाम शहद या दूध से।
			शास्त्रोक्त यौगिक चूर्ण/लेप/क्वाथ		
68	0101	अजमोदादि चूर्ण	अजमोद, वायबिडंग, सेंधानमक, देवदारू, चित्रक, पिपरामूल, सौंफ, पीपली, सौंठ, कालीमिर्च, विधारामूल, हरीतिकी एवं अन्य	आमवात, जोड़ों के शोथ, वायु रोग, पेट दर्द में लाभकारी होता है।	3–6 ग्रा. जल से दिन में दो बार भोजन उपरान्त।
69	0102	अम्लक्यादि चूर्ण	आंवला, चित्रक, हरीतकी, पिप्पली, सेंधानमक एवं अन्य।	अरूचि, अग्निमाद्य, अजीर्ण में उपयोगी।	3–6 ग्रा. जल से दिन में दो बार भोजन उपरान्त।
70	0103	आमलकी रसायन चूर्ण	आंवला, घृत, पिप्पली एवं शहद।	रसायन बल्य, जरा, श्वास–कास पालितरोग, मेधा, स्मृति में प्रभावकारी होता है।	3–6 ग्रा. दूध के साथ दिन में दो बार भोजन उपरान्त।

क्र.	बार कोड	उत्पाद का नाम	शामिल घटक	रोग जिस पर प्रभावकारी	उपयोग विधि
71	0104	अमृतादि चूर्ण	गिलोय, सोंठ, गोखरू,गोरखमुण्डी, वरूण छाल एवं अन्य।	आमवात, ज्वर, विषमज्वर में उपयोगी एवं रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है।	3–6 ग्रा. जल के साथ भोजन उपरान्त।
72	0105	अश्वगंधादि चूर्ण	अश्वगंधा, सोंठ, पिप्पली, काली मिर्च, दालचीनी, इलायची, तेजपत्र, नागकेसर, भारंगी, तालीसपत्र, जटामांसी, रास्ना, कुटकी, जीवंती, नागरमोथा, शर्करा एवं अन्य	शुक्रल रसायन, शक्तिवर्धक, त्रिदोषनाशक होता है। यह नसों की मजबूती की उत्तम औषधि है।	3–6 ग्रा. दूध से भोजन उपरान्त।
73	0106	**अविपत्तिकर चूर्ण**	सोंठ, काली मिर्च, पिप्पली, बालहरड़, बहेड़ा, आंवला, तेजपत्र, मिश्री, वायविडंग, निशोथ एवं अन्य	अपचन, अजीर्ण, अम्लपित्त, भूख की कमी, वातानुलोमक होता है।	3–6 ग्रा. जल से भोजन पूर्व।
74	0107	बालचतुर्भूज चूर्ण	नागर मोथा, पीपली, अतीस एवं काकड़ासींगी।	अतिसार, ज्वर, श्वास–कास, बालरोग में उपयोगी।	500 मि.ग्रा. से 1 ग्राम शहद के साथ।
75	0108	दाड़िमाष्टक चूर्ण	वंशलोचन, दालचीनी, तेजपत्र, इलायची, पीपलामूल, जीरा, धनिया, सौंठ, कालीमिर्च अनारदाना एवं अन्य	संग्रहणी रोग, अरूचि, अग्निप्रदीपक होता है।	3–6 ग्रा. जल से सुबह–शाम।
76	0109	दशांगलेप चूर्ण	सिरस छाल, मुलैठी , तगर, लाल चन्दन,बड़ी इलायची, जटामांसी, हल्दी, दारूहल्दी, कूठ, नेत्रबला, घी एवं अन्य	विसर्प, दाह एवं शोथ पर लाभदायी, संधिवात में प्रभावकारी होता है।	जल के साथ पकाकर मोटा एरण्ड पत्र सहन योग्य लेपकर ऊपर से चिपका दें।
77	0110	**दशनसंस्कार चूर्ण (दंतमंजन)**	हरड़, सोंठ, नागरमोथा, खैर, कपूर, कालीमिर्च, लौंग, एवं अन्य	दांतों के रोग (पायरिया) में, मुख से दुर्गन्ध आना, मसूडे में सूजन एवं मसूड़ों में खून आना आदि में लाभकारी।	सुबह–शाम अथवा भोजन के पश्चात दांतों पर मंजन की तरह उपयोग करें ।
78	0111	एलादि चूर्ण	इलायची, लौंग, नागकेशर छोहारा, द्राक्षा, मुलेठी, पिप्पली एवं मिश्री।	श्वास, खांसी, क्षय रोग में अत्यन्त लाभकारी।	3–6 ग्रा. शहद के साथ तीन से चार बार लें।
79	0112	**एरण्डभृष्ट हरितकी चूर्ण**	बाल हरड़ को एरण्ड तेल में भूनकर शोधित किया गया है।	आमवात, अर्श, कब्ज में अत्यन्त उपयोगी। पाचन शक्ति को बढ़ाता है।	3–6 ग्रा. भोजन के बाद गुनगुने पानी से।
80	0113	गंगाधर चूर्ण	नागरमोथा, सौंठ, धायफूल, पठानीलोध, नेत्रबला, बेलगिरी, पाठा, इन्द्रजौ, कुड़े की छाल, आम की गुठली एवं अन्य।	प्रवाहिका, अतिसार, ग्रहणी रोग में उपयोगी।	3 से 5 ग्राम चावल के धोवन में शहद मिलाकर दिन में तीन बार।
81	0114	गौमूत्र हरितकी चूर्ण	हरीतकी, गौमूत्र, हाउबेर, सौंफ, कूठ।	मुखरोग, विबंध, अर्श में उपयोगी।	3 से 6 ग्राम गुनगुने पानी के साथ भोजन उपरान्त।
82	0115	हरितक्यादि चूर्ण	हरड़, पुष्करमूल, वच, रास्ना, पिप्पली, सोंठ, नरकचूर	हृदय रोग, वायु रोग, वातानुलोमक होता है।	3–6 ग्राम सुबह–शाम उष्ण जल से ।

क्र.	बार कोड	उत्पाद का नाम	शामिल घटक	रोग जिस पर प्रभावकारी	उपयोग विधि
83	0116	हिंग्वादि चूर्ण	हींग, पिप्पली, धनिया, जीरा, वच, चव्य, चित्रक, पाठा एवं अन्य	अरूचि, अग्निमांद्य, शूल, संग्रहणी, गुल्म, वात रोग, अध्यमान, कब्जीयत से होने वाला उदर रोग आदि में लाभकारी है ।	3 से 6 ग्राम भोजन उपरान्त जल से।
84	0117	**हिंग्वाष्टक चूर्ण**	सोंठ, हींग, अजमोद, जीरा, काला जीरा, पिप्पली, सेंधा नमक, काली मिर्च एवं अन्य	गैस, कब्ज, अजीर्ण, हृदय, अर्श, ग्रहणी रोग में उपयोगी एवं पाचक होता है।	3 से 6 ग्राम भोजन के साथ सुबह–शाम।
85	0118	हिस्टीरियानाशक चूर्ण	भुनी हींग, वच, जटामांसी, कूठ, कालानमक, वायविडंग एवं अन्य।	इस चूर्ण को धैर्यपूर्वक 2 माह तक सेवन करने से हिस्टीरिया रोग दूर करने में सहायक होता है। उदर वात, कृमि, निद्रा न आना आदि विकार नष्ट हो जाते है।	3 से 6 ग्राम सुबह–शाम दूध या जल से।
86	0119	लवंगादि चूर्ण	लौंग, टंकण, नागरमोथा, धाय, बेल, धनिया, जातिफल, अनार, सफेद जीरा, सेंधा नमक, दारूहल्दी, अभ्रक भस्म, वंगभस्म, रक्त चंदन, चव्य, भृंगराज स्वरस एवं अन्य।	ग्रहणी, अतिसार, रक्त अतिसार, शूल, शोथ में लाभकारी होता है।	1 से 3 ग्राम जल के साथ भोजन उपरान्त।
87	0120	**लवण भास्कर चूर्ण**	पंच लवण, धनिया, पिप्पली, पीपरामूल, काला जीरा, नागकेसर, सोंठ, तालिसपत्र, दालचीनी, अनारदाना, अम्लवेत, कालीमिर्च एवं अन्य	अरूचि, पाचन, अजीर्ण, कब्ज, खट्टी डकार में अत्यन्त लाभकारी होता है।	3 से 6 ग्राम भोजन उपरांत पानी से।
88	0121	महासुदर्शन चूर्ण	रास्ना, धमासा, खरैटी, एरंडमूल, नरकचूर, वच, अडूसा, सोंठ, चव्य, नागरमोथा, पुनर्नवा, गिलोय, हरड़, बहेड़ा, दारूहल्दी अन्य औषधियां ।	समस्त प्रकार के ज्वर, मलेरिया में अत्यन्त लाभकारी होता है।	3 से 6 ग्राम भोजन उपरांत दूध से।
89	0122	मंजिष्ठादि चूर्ण	मंजिष्ठा, माजूफल, कलमी–मिश्री, बालहरड़, गुलाब पंखुडी, निशोथ सनाय पत्ती एवं अन्य	कुष्ठ, उदर विकार एवं रक्त में बढ़े हुए विषैले तत्वों को नष्ट करता है, एवं वर्ण्यकर होता है।	3 से 6 ग्राम जल से दिन में दो बारं।
90	0123	मूत्रविरेचन चूर्ण	शीतल चीनी, रेवत चीनी, छोटी इलायची, जीरा, कलमीशोरा, मिश्री	मूत्र मार्ग को साफ करता है, मूत्रल, शोथहर, अश्मरी, अष्टीला में उपयोगी होता है।	3 से 6 ग्राम दूध या जल के साथ सुबह–शाम।
91	0124	**निम्बादि चूर्ण**	नीम छाल, गिलोय, हरीतिकी, आंवला, बावची, सोंठ, वायविडंग, चक्रमर्द बीज, पिप्पली, अजवाइन, वच, जीरा, कुटकी, खैर, सेंधा नमक, हल्दी, दारूहल्दी, देवदारू, नागरमोथा एवं अन्य।	त्वचा रोग, कुष्ठ, आमवात, डेन्ड्रफ, पिम्पल्स, रक्तपित्त रोग को नष्ट करने वाला होता है।	3–6 ग्राम भोजन उपरांत पानी से।
92	0125	पंचसम चूर्ण	सौंठ, हरीतकी, पिप्पली, सोंचर नमक एवं निशोध।	आध्मान, शूल, आमवात, अर्श, उदर रोग में उपयोगी।	3 से 6 ग्राम जल के साथ भोजन उपरान्त।
93	0126	**पंचसकार चूर्ण**	सोंठ, सौंफ, सनाय पत्ती, बालहरड़, सेंधा नमक	कब्ज, उदर रोग, अजीर्ण, अर्श, मलावरोध को दूर करने वाला होता है।	3 से 6 ग्राम भोजन उपरांत गुनगुने पानी से।

क्र.	बार कोड	उत्पाद का नाम	शामिल घटक	रोग जिस पर प्रभावकारी	उपयोग विधि
94	0127	पंचकोल चूर्ण	पिप्पली, चव्य, सोंठ, पीपरामूल, चित्रक	अरूचि, यकृत विकार, गुल्म, शूल में लाभकारी, आमपाचक, वातशामक होता है।	3 से 6 ग्राम जल के साथ सुबह शाम।
95	0128	पंचनिम्बा चूर्ण	नीम फूल, नीम पत्ती, नीम छाल, नीम फल, नीम जड़, हरड़, बहेड़ा, आंवला, सोंठ, मिर्च, पिप्पली, ब्राम्ही, गोखरू, शुद्ध भल्लातक, चित्रक, वायविडंग, वराही कंद, लौहभस्म, गिलोय, हरिद्रा, दारूहरिद्रा, बाकुची, अमलतास, शर्करा, कूठ, इन्द्रजौ, पाठा, खैर छाल, असन क्वाथ, नीम छाल	खून शुद्ध करने में, कुष्ठ, महाकुष्ठ, सफेद दाग, दाद खाज–खुजली, एग्जिमा एवं अन्य समस्त त्वचा रोगों में लाभदायक।	3 से 6 ग्राम सुबह–शाम दूध या जल से।
96	0129	पुनर्नवादि चूर्ण	पुनर्नवा, गिलोय, सोंठ, सौंफ, कचूर, गौरखमुन्डी एवं अन्य	आमाशय शोथ, वात तथा उदर रोग में लाभकारी।	3 से 6 ग्राम कांजी या गरम जल से।
97	0130	**पुष्यानुग चूर्ण**	पाठा, जामुन गुठली, आम गुठली, पाषाणभेद, रसांजन, भटकटैया, मोचरस, लज्जालू, पदम केसर, अतीस, नागरमोथा, बेल, लोध्र, गेरू, कायफल, सोंठ, काली मिर्च, द्राक्षा, रक्त चंदन, अरलू, कुट्ज, अंजनामूल, धायफूल, मुलैठी , अर्जुन, कुमकुम	रक्तार्श, अतिसार, रक्त प्रदर एवं अन्य स्त्री रोग, स्त्रियों में प्रदर रोगों की उत्तम औषधि है।	3 से 6 ग्राम चावल के धोवन के साथ दिन में दो बार।
98	0131	**सारस्वत चूर्ण**	मीठाकूठ, अश्वगंधा, सेन्धानमक, अजवाइन, जीरा, कालाजीरा, सौंठ, मरिच, पिप्पली, पाठा, शंखपुष्पी, बच एवं ब्राम्ही स्वरस।	दुर्बलता, धारणाशक्ति, धैर्य, अनिद्रा, उन्माद में उपयोगी तथा स्मरणशक्ति को बढाती जाती है।	3 से 6 ग्राम घी, शहद के साथ सुबह–शाम।
99	0132	शिवाक्षार पाचन चूर्ण	हिंग्वाष्टक, बालहरड़ (शोधित), सज्जीखार	वायु, अजीर्ण, कब्ज, अफरा, वमन, अरूचि आदि रोगों में लाभकारी।	3 से 6 ग्राम भोजन उपरांत गुनगुने पानी से।
100	0133	शोधित हरीतकी चूर्ण	हर्रा, गौ–मूत्र	विवंध, उदर रोग, उदर शूल, गृहणी, अर्श, भंगदर, कुष्ठ रोग में उपयोगी।	3–6 ग्राम उष्ण जल से दिन में दो बार भोजन उपरान्त।
101	0134	**सितोपलादि चूर्ण**	काल्पी मिश्री, वंशलोचन, इलायची, दालचीनी, पिप्पली	कास–श्वास, जुकाम एवं बुखार, श्वास, क्षय आदि में उपयोगी होता है।	3 से 6 ग्राम सुबह– शाम शहद या दूध से ।
102	0135	सुदर्शन चूर्ण	देवदारू, वच, नागरमोथा, हरड़, कालमेघ एवं अन्य औषधियां।	समस्त प्रकार के ज्वर में लाभदायक।	3 से 5 ग्राम भोजन उपरांत दूध या शहद से।
103	0136	स्वादिष्ट विरेचन चूर्ण	शुद्ध गंधक, मुलैठी, सौंफ, सनाय, मिश्री	मलावरोध, अर्श, खुजली, कब्ज, त्वचा रोग।	3 से 6 ग्राम गुनगुने पानी से भोजन उपरान्त।
104	0137	तालिसादि चूर्ण	तालीसपत्र, काली मिर्च, सोंठ, पिप्पली, वंशलोचन, इलायची	वास–कास एवं बुखार में लाभदायक।	3 से 5 ग्राम भोजन उपरांत दूध या शहद से।

क्र.	बार कोड	उत्पाद का नाम	शामिल घटक	रोग जिस पर प्रभावकारी	उपयोग विधि
105	0138	त्रिकटु चूर्ण	सोंठ, मिर्च, पिप्पली	अरूचि, अग्निमाद्य एवं श्वास–कास में लाभकारी तथा भूख की कमी को दूर करता है।	500 मि.ग्रा. से 1 ग्राम शहद या घी से।
106	0139	**त्रिफला चूर्ण**	आंवला, हरड़, बहेड़ा	उदर रोग, नेत्र रोग, कब्ज, अर्श में उपयोगी तथा रसायन होता है।	3 से 6 ग्राम सुबह–शाम जल के साथ
107	0140	वैश्वानर चूर्ण	सेन्धा नमक, अजमोद, अजवायन, सोंठ, हरड़	आमवात, गुल्म, हृदय रोग, प्लीहा वृद्धि, ग्रन्थि रोग, विविध प्रकार के शूल, अर्श, वातजन्य विकार में लाभदायक हैं।	3 से 6 ग्राम गुनगुने पानी या मठ्ठा, घी या कांजी से सुबह– शाम।
108	0141	विडंगादि चूर्ण	वायबिडंग, सेंधा नमक, जवाखार, बड़ी हरड़ छिलका	इस चूर्ण को मट्ठे के साथ सेवन करने से सभी प्रकार के कृमि रोग नष्ट होते हैं।	3 से 6 ग्राम मठ्ठे के साथ भोजन उपरान्त।
109	0142	विजय चूर्ण	त्रिफला, दालचीनी, छोटी इलायची, तेजपत्र, त्रिकटु, वच, पाठा, यवक्षार, हल्दी, दारूहल्दी, चव्य, कुटकी, इन्द्रजौ, चित्रकमूल, सौंफ, पंचलवण, पीपरामूल, बेल फल एवं अन्य	कास, शोथ, अर्श, उदर रोग में अत्यन्त उपयोगी होता है।	3 से 6 ग्राम जल के साथ।
110	0143	विल्वादि चूर्ण	बिल्व गिरी, नागरमोथा, छोटी इलायची, सफेद चंदन, लाल चन्दन, अजवाइन, निशोथ, चित्रक मूल, बिड लवण, पिप्पली अश्वगंधा, खरेटी जड़, वंशलोचन, शुद्ध शिलाजीत	मस्तिष्क तथा स्नायु संबंधी रोग में लाभदायक हैं, ग्रहणी, अतिसार, उदर रोग में उपयोगी।	3 से 6 ग्राम सुबह शाम। दूध या कांजी के साथ।
			शास्त्रोक्त क्वाथ चूर्ण		
111	0201	दशमूल क्वाथ चूर्ण	बेल छाल, गंभारी छाल, पाढ़लछाल, अर्लू छाल, अरणी छाल, गोखरू पंचांग, छोटी कटेली, बड़ी कटेली पंचांग, पृष्ठपर्णी एवं शालपर्णी पंचांग	यह वात प्रकोप, हृदय–अवरोध, शोथ, कफ वृद्धि, पसलियों की पीड़ा एवं गर्भाशय शोधक, आम–विषहर व शूल नाशक होता है।	10–15 ग्राम का क्वाथ बनायें (क्वाथ बनाने के लिये इसमें एक गिलास पानी डालकर उबाला जाये। चौथाई हिस्सा बचने पर इसे छान लें।) पिप्पली के चूर्ण अथवा घी मिलाकर रोगानुसार अनुपानों के साथ लें।
112	0202	देवदारू क्वाथ चूर्ण	देवदारू, वच, कुष्ठ, पिप्पली, सौंठ, चिरायता, कटफल, नागरमोथा, हरीतकी, गजपिप्पली, कंटकारी, गोक्षरू, अतिविषा, गुडुची एवं अन्य।	शूल, कास, ज्वर, श्वास आदि में उपयोगी।	5 से 10 ग्राम चूर्ण को चार गुना जल में मिलाकर क्वाथ तैयार कर दिन में दो बार सेवन करें, भोजन उपरान्त।
113	0203	**गोक्षुरादि क्वाथ चूर्ण**	गोखरू, एरण्डमूल, बच, रास्ना, पुनर्नवा	सन्धिवात, हाथ–पैर के दर्द एवं किडनी, अश्मरीहर, एवं वातरोगों पर लाभकारी होता है।	5 से 10 ग्राम चूर्ण को चार गुना जल में मिलाकर क्वाथ तैयार कर दिन में दो बार सेवन करें, भोजन उपरान्त।
114	0204	कांचनार क्वाथ चूर्ण	कांचनार छाल, सौंठ, वरूण छाल, शहद एवं अन्य।	गण्डमाला, गुल्म, गलगण्ड एवं शरीर में किसी भी प्रकार की ग्रंथि को ठीक करने में उपयोगी।	5–10 ग्राम चूर्ण को चार गुना जल में मिला कर क्वाथ तैयार करें एक भाग जल बचे छांन कर दिन में दो बार सेवन करें, भोजन उपरान्त।

क्र.	बार कोड	उत्पाद का नाम	शामिल घटक	रोग जिस पर प्रभावकारी	उपयोग विधि
115	0205	महारास्नादि क्वाथ चूर्ण	रास्ना, बहेड़ा, आंवला, हल्दी, दारूहल्दी, बड़ी कटेली, छोटी कटेली, नरकचूर, सौंठ, मरिच पिप्पली, पीपरामूल, गिलोय, धमासा, कुटकी, कालमेघ व अन्य	समस्त वात व्याधि, शोथ में उपयोगी होता है।	5 से 10 ग्रा. दो कप पानी में पकाये आधा कप बचे छानकर गुनगुना पिये।
116	0206	पाषाणभेदादि क्वाथ चूर्ण	पाषाणभेद, मुलैठी , अडूसा, गोखरू, एरंडमूल, अमलतास, पिप्पली, शुद्ध शिलाजीत, एला	अश्मरी, मूत्रल, मूत्राशय शोथ में उपयोगी।	5 से 10 ग्रा. क्वाथ बनाकर शहद या मिश्री के साथ।
117	0207	फलत्रिकादि क्वाथ चूर्ण	आंवला, बेहड़ा, हरड़, पटोल, कुटकी।	ज्वर, छर्दी (छींक), अम्लपित्त, कामला, पाण्डू में उपयोगी।	5 से 10 ग्रा. क्वाथ बनाकर शहद और मिश्री के साथ।
118	0208	पुनर्नवाष्टक क्वाथ चूर्ण	पुनर्नवा, निम्ब, पटोल, सौंठ, कटुका, गिलोय, देवदारू, हरीतकी।	उदर रोग, शोथ, कास, सर्वांगशोथ में उपयोगी।	5 से 10 ग्रा. क्वाथ बनाकर ।
119	0209	रास्नासप्तक क्वाथ चूर्ण	रास्ना, गुडुची, अमलतास, देवदारू, गोखरू, एरण्डमूल, पुनर्नवा।	शोथहर, शरीर के जोड़ों, हाथ–पैर दर्द एवं विभिन्न प्रकार के शारीरिक दर्द एवं वातरोगों पर अत्यन्त लाभकारी औषधि होती हैं	5–10 ग्राम चूर्ण को चार गुना जल में मिलाकर क्वाथ तैयार कर दिन में दो बार सेवन करें, भोजन उपरान्त।
120	0210	त्रिफला क्वाथ चूर्ण	आंवला, हरड़, बहेड़ा।	नेत्र रोग, मुख रोग, कामला में उपयोगी।	5 से 10 ग्रा. क्वाथ बनाकर।
121	0211	वरूणादि क्वाथ चूर्ण	वरूण, सौंठ, गोखरू एवं अन्य।	अश्मरी एवं वात–व्याधि आदि रोगों को नष्ट करता है।	5 से 10 ग्रा. क्वाथ बनाकर यवक्षार के साथ।
			पेटेन्ट आयुर्वेदिक चूर्ण / क्वाथ		
122	0301	**विन्ध्य एन्टी अमीबिया चूर्ण**	सौंफ, बाल हरड़, सोंठ, कुटकी, बेल गूदा, ईसबगोल की भूसी, कुड़ा छाल, वायबिडंग, गुलाब के फूल एवं अन्य	यह अमीबिओसिस के लिये अच्छा चूर्ण है, सभी तरह के अमीबा नष्ट हो जाते हैं, अतिसार, पेट दर्द, गृहणी, अर्श में लाभकारी होता है।	3–6 ग्राम. चूर्ण गुनगुने पानी से भोजन उपरान्त।
123	0302	विन्ध्य पाचक आंवला सुपारी	आंवला, जीरा, नमक, अजवाईन, कालीमिर्च, पिप्पली, अनारदाना, सौंफ, पुदीना पत्ती, नींबू रस, अदरक रस।	यह मुख शुद्धि हेतु गुटका है जिसको कभी भी सुपारी की तरह उपयोग किया जा सकता है, इससे पाचन शक्ति बढ़ती है तथा विटामिन सी की कमी में उपयोगी।	मुखशोधन हेतु आवश्यकतानुसार।
124	0303	**विन्ध्य पौष्टिक चूर्ण**	अश्वगंधा, सफेद मूसली, शतावर, अनन्तमूल, मुलैठी , इलायची एवं अन्य।	शारीरिक दुर्बलता, शक्तिवर्धक, रोगप्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है।	3–6 ग्राम. दूध या गुनगुने पानी से दिन में दो बार ।
125	0304	विन्ध्य शतावरी कल्प	अश्वगंधा, शतावर, सफेद मूसली, अर्जुन छाल, इलायची, मिश्री एवं अन्य	बच्चो व बुर्जुगों की हड्डिया मजबूत करने में तथा सामान्य टॉनिक रूप में उपयोग तथा स्तन्यवर्धक होता है।	3–6 ग्राम. दूध के साथ सुबह–शाम।

क्र.	बार कोड	उत्पाद का नाम	शामिल घटक	रोग जिस पर प्रभावकारी	उपयोग विधि
126	0305	विन्ध्य स्लिम क्वाथ चूर्ण	त्रिफला, सोंठ, गिलोय, कुटकी, वायबिडंग, पुनर्नवा	अतिरिक्त चर्बी (मोटापा) हटाने में, मेद को कम करने में सहायक होता है।	सुबह–शाम स्लिम कैप्सूल के साथ 5–10 ग्राम चूर्ण का काढ़ा बनाकर भोजन के बाद लें।
127	0306	विन्ध्य वातहर क्वाथ चूर्ण	रास्नासप्तक चूर्ण, पुनर्नवामूल चूर्ण, अश्वगंधामूल चूर्ण, निर्गुण्डी पत्ती चूर्ण	समस्त वातविकार, संधिशोथ, आमवात, शोथहर में उपयोगी हेाता है।	सुबह–शाम वात कैप्सूल के साथ 5–10 ग्राम चूर्ण का काढ़ा बनाकर भोजन के बाद लें।
			पेटेन्ट क्रीम/आईन्टमेन्ट/तेल		
128	0401	विन्ध्य फुट क्रेक क्रीम	गंधक, घी, कपूर, एरण्डी तेल, कत्था, सुहागा, मोम, कोकम ।	यह क्रीम पैर की एड़ी को मुलायम करने के लिए, एड़ी फटने पर लाभकारी है, बारिश में पैर उगलियों के बीच होने वाली कंदरी रोग में लाभकारी ।	सोने के पूर्व पैर हल्के गुनगुने पानी से साफ करने के उपरान्त सूखे कपड़े से सुखा देने के पश्चात् क्रीम को लगाकर हल्की मालिश करें। सुबह पैर को गुनगुने पानी से धो लें। 15 से 20 दिन में लाभकारी।
129	0402	विन्ध्य हर्बल बाम	पोदिना सत्व, कपूर, गंधपुरा तेल, वैसलीन	सिर दर्द, कास–श्वास, मोच, एवं घुटने के दर्द में आदि में उपयोगी।	दर्द वाली जगह पर दो से तीन बार लगाकर हल्की मालिश करें, गरम कपड़ो से ढककर रखें।
130	0403	विन्ध्य केश तैल	भृंगराज तेल, मालकांगनी तेल, नीम छाल, अर्कमूल, गुंजा, कटसरैया (पियाबासा) स्वरस, निर्गुण्डी स्वरस	बालों का झड़ना, बालों का सफेद होना एवं रूसी में लाभकारी होता है।	सिर में प्रतिदिन लगाकर मालिश करना।
131	0404	**विन्ध्य पीड़ाहारी तेल**	निर्गुण्डी तेल, महानारायण तेल, महाविषगर्भ तेल, चंदनबलाक्षादि तेल, पिपरमेंट, कर्पूर, नीलगिरी तेल, महामाष तेल, गंधपुरा तेल	जोडों के दर्द, मांस पेशियों के खिचाव व सिर दर्द में तुरन्त लाभकारी होता हे।	दर्द वाली जगह पर दो से तीन बार लगाकर हल्की मालिश करें।
132	0405	**विन्ध्य स्किन आइंटमेंट**	चक्रमर्द, कपूर, सुहागा, गंधक, घी, फिटकरी, मोम, हरताल, मैनसिल, नीला थोथा, नीम तेल, करंज तेल।	यह दाद, खाज, खुजली, एग्जिमा एवं अन्य त्वचा रोग में त्वरित लाभकारी है तथा फोड़े–फुंसियों में और कुष्ठ रोग में लगातार उपयोग करने से लाभ होता है ।	प्रभावित जगह को साफ कर दिन में दो से तीन बार आईंटमेंट लगाये।
			विन्ध्य हर्बल्स पेटेंट कैप्सूल		
133	0501	एन्टासिड–500 कैप्सूल	आंवला, मुलैठी के घनसत्व, पीपरामूल घनसत्व, सिद्धामृत भस्म, प्रवाल भस्म, शुक्ति भस्म, यशदभस्म एवं निशोथ घनसत्व।	यह अम्ल पित्त का नाश करता है, एसिडिटी, खट्टी डकार, वात रोग में भी लाभदायक है।	1–2 कैप्सूल भोजन करने से आधे घण्टे पूर्व दिन में दो बार जल से।
134	0502	एन्टीवर्म कैप्सूल	पलाश बीज, वायबिडंग, कुटज छाल सभी के घनसत्व।	कृमिनाशक, उदररोग, ग्रहणी में अत्यन्त उपयोगी होता है।	1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत जल से

क्र.	बार कोड	उत्पाद का नाम	शामिल घटक	रोग जिस पर प्रभावकारी	उपयोग विधि
135	0503	एन्टीडायरल–500 कैप्सूल	दारू हल्दी, नागरमोथा, कुड़ा छाल, अतीस, जायफल, धनिया, अदरक, बेल, मरोड़फली, सौंफ, अनार, इन्द्रजौ, मोचरस, धायफूल, पठानी लोध आदि सभी के घनसत्व।	अतिसार, ग्रहणी, अमीबीएसिस एवं उदरशूल में लाभदायक है।	1–2 कैप्सूल दिन में दो से तीन बार जल से।
136	0504	आंवला कैप्सूल	आंवला घनसत्व	विटामिन सी, रसायन, नेत्ररोग, अम्लपित्त में उपयोगी।	1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत जल से।
137	0505	**अर्जुन कैप्सूल**	अर्जुन घन सत्व एवं गिलोय घनसत्व	हृदय रोग, उच्च रक्तचाप में लाभकारी।	1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत दूध से दिन में दो बार।
138	0506	**अश्वगंधा कैप्सूल**	अश्वगंधा घनसत्व	बल्य, कमजोरी, शक्तिवर्धक, तनाव में अत्यन्त लाभकारी।	1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत दूध से दिन में दो बार।
139	0507	भुई आंवला कैप्सूल	भुई आंवला घनसत्व	ज्वर, यकृत रोग, पीलिया में अत्यन्त लाभकारी।	1–2 कैप्सूल भोजन पूर्व जल से दिन में दो बार।
140	0508	ब्राम्ही कैप्सूल	ब्राम्ही, मुलैठी , शंखपुष्पी, गिलोय सभी के घनसत्व।	स्मरणशक्ति बढ़ाना, मानसिक दुर्बलता, नाड़ी तंत्र की कमजोरी में उपयोगी।	1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत दूध से दिन में दो बार।
141	0509	च्यवनफोर्ट कैप्सूल	पिप्पली, काकड़ासिंगी, हरड़, अष्टवर्ग, आंवला एवं अन्य सभी का घनसत्व	शक्तिवर्धक, रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाना, श्वास–कांस (मधुमेह रोगी भी ले सकते हैं) में उपयोगी।	1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत दूध से दिन में दो बार।
142	0510	कफ–6 कैप्सूल	अडूसा, हल्दी, तुलसी, मुलैठी, कंटकारी, भुई ऑवला सभी के घनसत्व	कफ, सर्दी, खांसी, श्वास में अत्यन्त उपयोगी।	1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत जल से दिन में दो बार।
143	0511	दशमूल कैप्सूल	दशमूल घनसत्व	दुर्बलता, स्त्री रोग एवं कमजोरी, वातरोग में लाभकारी।	1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत दूध या जल से दिन में दो बार।
144	0512	**डॉयबो प्लस–500 कैप्सूल**	गिलोय, चिरायता, मेथी, गुड़मार, जामुन गुठली, बीजासार, चांदनी पत्ते, तुलसी पत्ते, सदाबहार फूल, अश्वगंधा, शतावर, त्रिफला, त्रिकटु, नीम, बेलपत्र आदि सभी के घनसत्व एवं शिलाजीत स्वर्णमाक्षिक भस्म।	यह मधुमेह में लाभदायक है, इसके लगातार सेवन करने से शर्करा स्तर धीरे–धीरे कम होता है । इसका दुष्प्रभाव नहीं होता, इसके प्रयोग से अन्य रोग भी दूर होते हैं एवं रोगप्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है।	1–2 कैप्सूल दिन में दो बार भोजन पूर्व एवं बेहतर लाभ के लिये भोजन उपरान्त हिपेटो कैप्सूल लें।
145	0513	**गिलोय कैप्सूल**	गिलोय घनसत्व	रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाना, ज्वर रोग में उपयोगी।	1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत जल या दूध से दिन में दो बार।
146	0514	**गोल्ड पावर–500 कैप्सूल**	अश्वगंधा, कैवांच बीज, विधारा, सफेद मूसली, गिलोय, गोखरू, जायफल, कबाबचीनी, चोपचीनी, त्रिकटु, अकरकरा, शतावर, त्रिफला, गोरखमुण्डी आदि सभी के घनसत्व एवं अभ्रक भस्म, शिलाजीत, सालममिश्री।	पौरूष शक्ति बढ़ती है एवं कमजोरी दूर होती है। इससे बल बढ़ता है व ताकत आती है।	1–2 कैप्सूल दिन में दो बार दूध से।

क्र.	बार कोड	उत्पाद का नाम	शामिल घटक	रोग जिस पर प्रभावकारी	उपयोग विधि
147	0515	गायनो–8 कैप्सूल	अशोक, अश्वगंधा, आंवला, माजूफल, पठानी लोध्र, गिलोय, पुनर्नवा सभी के घनसत्व एवं प्रवालपिष्टी।	स्त्री रोग, कमर दर्द, प्रदर में लाभप्रद है।	1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत दूध से दिन में दो बार ।
148	0516	हर्बोकार्ड–4 कैप्सूल	अर्जुन, त्रिफला, अश्वगंधा, गिलोय सभी के घनसत्व	हृदय रोग, रक्त विकार, उच्च रक्तचाप में लगातार सेवन करने पर लाभदायक है।	1–2 कैप्सूल दो बार भोजन उपरांत जल से दिन में दो बार।
149	0517	**हिपैटो–500 कैप्सूल**	पुनर्नवा, अर्जुन, भृंगराज, गिलोय, वायबिडंग, पिप्पली, सरपोंखा, पित्त पापड़ा, कडुचिरायता, भुई आंवला एवं मकोय पंचांग आदि के घनसत्व।	यकृत विकार, पाण्डु रोग, कामला में लाभकारी, इसके लगातार सेवन करने से यकृत मजबूत होता है।	1–2 कैप्सूल भोजन पूर्व दिन में दो या तीन बार।
150	0518	जटामांसी कैप्सूल	जटामांसी घनसत्व	नाड़ी तंत्र, सिरशूल, मानसिक थकान, अवसाद, अनिंद्रा उपयोगी।	1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत दूध या जल से दिन में दो बार।
151	0519	कालमेघ कैप्सूल	कालमेघ घनसत्व	ज्वर, विषम ज्वर, मलेरिया, चिकनगुनिया में अत्यन्त उपयोगी।	गिलोय कैप्सूल के साथ 1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत दूध से।
152	0520	एल–5 कैप्सूल	भू–आंवला, कुटकी, चिरायता, गिलोय, पुनर्नवा सभी के घनसत्व	पीलिया, यकृत रोग, पाण्डुरोग में अत्यन्त उपयोगी।	1–2 कैप्सूल भोजन से 30 मिनट पूर्व जल से ।
153	0521	लौह कैप्सूल	स्वर्णमाक्षिक भस्म एवं मण्डूर भस्म त्रिफला और गिलोय के घनसत्व।	रक्त की कमी, अर्श, शारीरिक दुर्बलता में लाभकारी।	1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत दूध से।
154	0522	लेक्स कैप्सूल	अमलतास घनसत्व	कब्ज, मृदुविरेचक, उदर रोग में उपयोगी।	1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत जल या दूध से दिन में दो बार।
155	0523	**ल्युकोरिल–500 कैप्सूल**	पुष्यानुग चूर्ण, शतावर, नागकेशर, अश्वगंधा, माजूफल, त्रिफला, पठानी लोध्र, अशोक आदि सभी के घनसत्व।	श्वेत प्रदर, रक्त प्रदर, अनियमित मासिक स्त्राव, कटिशूल में लाभदायक।	1–2 कैप्सूल भोजन उपरान्त जल या चावल के धोवन से रोगानुसार दिन में दो बार।
156	0524	महासुदर्शन कैप्सूल	महासुदर्शन घनसत्व	ज्वर, विषम ज्वर, मलेरिया में अत्यन्त लाभकारी।	1–2 कैप्सूल दूध से भोजन उपरांत दिन में दो बार।
157	0525	मेधा–500 कैप्सूल	मालकांगनी, ब्राम्ही, शंखपुष्पी, पीपरामूल, बच, सोंठ, शतावर, अश्वगंधा, गिलोय, त्रिकटु, अर्जुन, जटामांसी, भृंगराज सभी के घनसत्व एवं मुक्तापिष्टी	स्मरण शक्ति, बुद्धि का विकास आदि में लाभदायक है उन्माद, अपस्मार।	1–2 कैप्सूल भोजन उपरान्त सुबह–शाम दूध से।
158	0526	निम्बादि कैप्सूल	निम्बादि चूर्ण घनसत्व	आमवात, मुहासे, त्वचा रोग, कुष्ठ, अर्श, व्रण, रूसी में उपयोगी।	1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत जल से दिन में दो बार।

क्र.	बार कोड	उत्पाद का नाम	शामिल घटक	रोग जिस पर प्रभावकारी	उपयोग विधि
159	0527	स्लिम–500 कैप्सूल	बहेड़ा, हरड़, आंवला, काली मिर्च, पिप्पली, अदरक, चित्रकमूल, काला जीरा, कुटकी, नीम, नागरमोथा, अपामार्ग, चव्य, मेथी, हल्दी, पुनर्नवा, बीजासार, निशोथ आदि के घनसत्व एवं स्वर्णमाक्षिक भस्म, मेदोहर गुगल एवं शिलाजीत।	इसके लगातार सेवन करने से मोटापा धीरे–धीरे दूर होता है, इसके दुष्प्रभाव नहीं है, कमजोरी भी नहीं आती, शरीर में अतिरिक्त जमा वसा का शमन करता है, मोटापे के कारण उत्पन्न थकान को दूर करता है।	1–2 कैप्सूल दिन में दो बार एवं बेहतर लाभ के लिये स्लिम क्वाथ के साथ सेवन करें।
160	0528	**स्ट्रेस–5 कैप्सूल**	ब्राम्ही, जटामांसी, मालकांगनी, सर्पगंधा सभी के घनसत्व	मानसिक तनाव, उच्च रक्तचाप, अनिद्रा में लाभदायक।	1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत दूध या जल से दिन में दो बार।
161	0529	त्रिफला कैप्सूल	त्रिफला घनसत्व	उदर रोग, कब्ज, प्रमेह में उपयोगी तथा मेदोहर में लाभकारी होता है।	1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत जल से दिन में दो बार।
162	0530	**वात कैप्सूल**	महारास्नादि क्वाथ, निर्गुण्डी, अश्वगंधा, तगर के घनसत्व, गोदंती भस्म एवं प्रवाल पिष्टी।	वात रोग, आमवात, शोथ, संधिवात, ग्रधसी कटिशूल आदि में उपयोगी।	1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत वात क्वाथ चूर्ण जल से दिन में दो बार।
			विन्ध्य हर्बल्स पेटेंट वटी/टेबलेट		
163	0601	एण्टासिड वटी	शर्करा रहित अविपत्तिकर घनसत्व, आंवला घनसत्व, मूलैठी घनसत्व, पीपरामूल घनसत्व, मुक्ता–शुक्ति भस्म, शंख भस्म।	अम्लपित्त, उद्गार (डकार), सीने में जलन, विविध आटोप, उदररोग में उपयोगी।	2–3 गोली दिन में दो बार पानी के साथ।
164	0602	एण्टीडायरल वटी	दारू हल्दी घनसत्व, नागरमोथा घनसत्व, कुड़ा छाल घनसत्व, अतीस घनसत्व, जायफल घनसत्व, धनिया घनसत्व, अदरक घनसत्व, बेल घनसत्व, मरोड़फली घनसत्व, सौंफ घनसत्व, अनार घनसत्व, इन्द्रजौ घनसत्व, मोचरस घनसत्व, धवईफुल घनसत्व, पठानीलोध्र घनसत्व	अतिसार, विसूचिका व गृहणी में लाभकारी।	2–3 गोली दिन में दो बार पानी के साथ।
165	0603	**विन्ध्य अश्वगंधा वटी**	अश्वगंधा घनसत्व	बल्य, कमजोरी, शक्तिवर्धक, तनाव में अत्यन्त लाभकारी।	2–3 गोली दिन में दो बार दूध के साथ।
166	0604	भुई आंवला वटी	भुई आंवला घनसत्व	यकृत दौर्बल्य, ज्वर, विषम ज्वर, कामला, गृहणी प्लीहा वृद्धि में उपयोगी।	2–3 गोली दिन में दो बार पानी के साथ।
167	0605	**विन्ध्य कैल्शियम टेबलेट**	गोदन्ती भस्म, प्रवाल भस्म, मुक्ता–शुक्ति भस्म, शंख भस्म, अर्जुन घनसत्व, हड़जोड़ घनसत्व	कैल्शियम की कमी, अस्थि शूल, अस्थि क्षय में लाभकारी।	2–3 गोली दिन में 2 बार शहद या दूध से।

क्र.	बार कोड	उत्पाद का नाम	शामिल घटक	रोग जिस पर प्रभावकारी	उपयोग विधि
168	0606	कफहारी वटी	अडुसा घनसत्व, हल्दी घनसत्व, तुलसी घनसत्व, मूलैठी घनसत्व, कंठकारी घनसत्व भुई आंवला घनसत्व,, पिप्पली घनसत्व, गिलोय घनसत्व।	कास श्वास, प्रतिश्याय आदि में लाभकारी।	2–3 गोली दिन में दो बार पानी के साथ।
169	0607	विन्ध्य एरण्डभृष्ट हरीतकी वटी	एरण्डभृष्ट हरीतकी घनसत्व।	आमवात, अर्श, कब्ज में अत्यन्त उपयोगी। पाचन शक्ति को बढ़ाता है।	2–4 गोली सोते समय। गुनगुने पानी से।
170	0608	गायनो वटी	अशोक घनसत्व, अश्वगंधा धनसत्व, आंवला घनसत्व, माजुफल घनसत्व, पठानी लोध घनसत्व, गिलोय घनसत्व, पुनर्नवा घनसत्व, प्रवाल पिष्टी, शतावर घनसत्व, चंद्रशुर घनसत्व।	समस्त स्त्री रोग, श्वेत प्रदर, रक्त प्रदर, अतिआर्तव में अत्यन्त उपयोगी।	2–3 गोली दिन में दो बार पानी के साथ भोजन उपरान्त।
171	0609	विन्ध्य हर्बल डी–स्टोन टेबलेट	वरूण, पत्थरचट्टा, गोखरू, पुनर्नवा, कुटकी, गिलोय, चोबचीनी, कवाबचीनी, दालचीनी सभी के घनसत्व, स्वेत पर्पटी, सज्जीखार, हर्जरूलयहूद भस्म, शुद्ध शीलाजीत।	अश्मरीहर, मूत्रल, रक्त दाह, मूत्रकृच्छ, कटिशूल।	2–4 गोली दिन में दो बार पानी से।
172	0610	**विन्ध्य हर्बल पौष्टिक वटी**	शतावर घनसत्व, सफेद मुसली घनसत्व, अश्वगंधा घनसत्व, विदारीकंद घनसत्व, निर्गुण्डी घनसत्व, पिप्पली घनसत्व, आंवला घनसत्व, पुर्ननवा घनसत्व, हल्दी घनसत्व, मुलैठी घनसत्व, तुलसी घनसत्व, बलामूल घनसत्व।	दौर्बल्यता, शुक्रक्षय, वात रोग में लाभकारी।	2–3 गोली दिन में दो बार दूध के साथ।
173	0611	**विन्ध्य हर्बल स्लीपिंग वटी**	सर्पगंधा, जटामांसी, ब्राम्ही, शंखपुष्पी, रास्ना, तगर, कुशमंद, अर्जुन, निर्गुण्डी, वच, भांग बीज सभी के घनसत्व।	अनिद्रा, स्मृति दौर्बल्य, तनाव, उच्च रक्तचाप, भ्रम।	1–2 गोली दिन में दो बार सोने से पहले।
174	0612	जटामांसी वटी	जटामांसी घनसत्व।	अनिंद्रा ज्वर, उन्माद अपस्मार, नाडीतन्त्र में लाभकारी।	2–3 गोली दिन में दो बार भोजन से पूर्व दूध या पानी के साथ।
175	0613	कालमेघ वटी	कालमेघ घनसत्व	ज्वर, विषम ज्वर, यकृत रोग में उपयोगी।	1–2 गोली दिन में दो बार पानी या दूध के साथ।
176	0614	लेक्स वटी	अमलतास घनसत्व	विबंध, अर्श में उपयोगी। मृदुरेचन के लिये यह श्रेष्ठ औषधि।	2–4 गोली दिन में दो बार गर्म पानी के साथ।
177	0615	**महासुदर्शनघन वटी**	महासुदर्शन चूर्ण घनसत्व	ज्वर, जीर्ण ज्वर, विषम ज्वर, यकृत विकार में लाभकारी।	1–2 गोली दिन में दो बार दूध या शहद के साथ।
178	0616	विन्ध्य मकोय टेबलेट	मकोय, पुनर्नवा, गोक्षुर एवं सौंठ सभी के घनसत्व।	पाण्डु, कामला, शोथ, वातरोग, नेत्ररोग।	2–3 गोली दिन में दो बार दूध या जल के साथ।

To be taken under Medical Supervision

क्र.	बार कोड	उत्पाद का नाम	शामिल घटक	रोग जिस पर प्रभावकारी	उपयोग विधि
179	0617	मेधा वटी	मालकांगनी, ब्राम्ही, शंखपुष्पी, पीपरामूल, बच, सोंठ, शतावर, अश्वगंधा, गिलोय, त्रिकटु, अर्जुन, जटामांसी, भृंगराज सभी के घनसत्व एवं मुक्तापिष्टी	स्मृति दौर्वल्य, अनिद्रा, तनाव एवं उन्माद में उपयोगी।	2–3 गोली दिन में दो बार दूध या शहद के साथ।
180	0618	विन्ध्य पथरीहर वटी	तरूण छाल घनसत्व, गोखरू घनसत्व, स्वेत पर्पटी, हजरूयहूद भस्म, एरण्डमूल, पाषाणभेद, पुनर्नवा सभी के घनसत्व।	अश्मरी, प्रोस्टेट, मूत्राघात।	2–3 गोली दिन में दो बार।
181	0619	**विन्ध्य सफेद मूसली टेबलेट**	सफेद मूसली घनसत्व।	पौष्टिक, शुक्रवर्धक, संधिवात, अम्लपित्त शामक।	2–3 गोली दिन में दो बार दूध के साथ।
182	0620	**विन्ध्य शतावरी टेबलेट**	शतावर घनसत्व।	दुग्धजनन, स्त्रीरोग, संन्धिवात, पौष्टिक, वातहर।	2–3 गोली दिन में दो बार दूध के साथ।
183	0621	स्लिम वटी	बहेड़ा घनसत्व, हरड़ घनसत्व, आंवला घनसत्व, कालीमिर्च घनसत्व, पिप्पली घनसत्व, अदरक घनसत्व, चित्रकमूल घनसत्व, काला जीरा घनसत्व, कुटकी घनसत्व, नीम घनसत्व, नागरमोथा घनसत्व, अपामार्ग घनसत्व, चव्य घनसत्व, मैथी घनसत्व, हल्दी घनसत्व, पुनर्नवा घनसत्व, बीजासार घनसत्व	मेदोरोग (मोटापा) में लगातार उपयोग करने पर लाभदायक है।	2–3 गोली दिन में दो बार उष्ण जल के साथ एवं बेहतर लाभ के लिये स्लिम क्वाथ के साथ संवन करें।
184	0622	स्ट्रेस वटी	ब्राम्ही घनसत्व, जटामांसी घनसत्व, मालकांगनी घनसत्व, सर्पगंधा घनसत्व, गिलोय घनसत्व	तनाव, अनिंद्रा, उच्च रक्तचाप में उपयोगी।	2–3 गोली दिन में दो बार पानी या दूध के साथ।
185	0623	**विन्ध्य त्रिफला टेबलेट**	त्रिफला घनसत्व	उदर रोग, कब्ज, प्रमेह में उपयोगी तथा मेदोहर में लाभकारी होता है।	2–4 टेबलेट भोजन उपरांत जल से।
186	0624	वात वटी	महारास्नादि घनसत्व, प्रवाल पिष्टी, गोदंती भस्म, निर्गुण्डी घनसत्व, अश्वगंधा घनसत्व, तगर घनसत्व , हल्दी घनसत्व, अजमोद घनसत्व	समस्त वात रोग, शूल आदि में उपयोगी।	2–3 गोली दिन में दो बार पानी या दूध के साथ एवं बेहतर लाभ के लिये वातहर क्वाथ के साथ सेवन करें।
187	0625	विन्ध्य वेदनाहर टेबलेट	रास्ना घनसत्व, रेणुका घनसत्व,, पारसिक यवानी घनसत्व, यशद भस्म, गोदती भस्म, स्वर्णमाक्षिक भस्म, महावात विध्वान्सक रस।	संधिवात, संधिशोथ, गृध्रसी, आमवात, कटिवात।	2–4 टेबलेट दिन में दो बार।

क्र.	बार कोड	उत्पाद का नाम	शामिल घटक	रोग जिस पर प्रभावकारी	उपयोग विधि
			विन्ध्य हर्बल्स पेटेंट टॉनिक/सीरप		
188	0701	विन्ध्य कफ नाशक सीरप	कण्टकारी मूल, विभीतक फल मज्जा, जवासा, श्लेषमान्तक लघु, गोजिव्हा, वासा स्वरस, हंसपदी, जूफा, मूलैठी, अदरक स्वरस, तुलसी स्वरस, खदिर छाल, शक्कर।	कास–श्वास, प्रतिश्याय आदि में उपयोगी।	1–2 चम्मच दिन में दो बार भोजन उपरांत। बच्चों के लिये– 1 से 3 मि. ली. व्यस्क के लिये– 3 से 6 मि.ली.
189	0702	विन्ध्य डाईयूरेटिक सीरप	गोखरू, वरूण, पुनर्नवा, एरण्डमूल, पाषाणभेद, हरड़, अपामार्ग, अमलतास, सहजन, शक्कर।	शोथ, मूत्रकृच्छ, मूत्राघात, वृक्क संबंधी विकार में उपयोगी।	1–2 चम्मच दिन में दो बार भोजन उपरांत।
190	0703	विन्ध्य डरमेक्स सीरप	मंजीष्ठा, दारूहल्दी, नीम पंचांग, खदिर, अनन्तमूल, बच, कुटज, पटोल पत्र,शक्कर।	चर्म रोग, मुहासे, कुष्ठ आदि में उपयोगी।	1–2 चम्मच दिन में दो बार भोजन उपरांत।
191	0704	विन्ध्य ज्वरहारी सीरप	गिलोय, कालमेघ, खूबकला, पटोल पत्र, दारूहल्दी, घृतकरंज छाल, सप्तपर्णी छाल, नाही पंचांग, तुलसी, इन्द्रयव, नागरमोथा, पित्तपापड़ा, खस, शक्कर।	ज्वर, जीर्ण ज्वर में लाभकारी।	1–2 चम्मच दिन में दो बार भोजन उपरांत। बच्चों के लिये– 1 से 3 मि. ली. व्यस्क के लिये– 3 से 6 मि.ली.
192	0705	**विन्ध्य लीवर टॉनिक**	गिलोय, दारूहल्दी, मकोय पंचांग, भुंई आंवला, कासनी, कुटकी, चित्रकमूल, पुनर्नवा भृंगराज, त्रिफला, शक्कर।	यकृत रोग, कामला, भूख की कमी, ज्वर में उपयोगी।	1–2 चम्मच दिन में दो बार भोजन उपरांत। बच्चों के लिये– 1 से 3 मि. ली. व्यस्क के लिये– 3 से 6 मि.ली.
193	0706	विन्ध्य श्वासहारी सीरप	सोमलता, कण्टकारी, भारंगी, पुष्करमूल, वासा, मूलैठी, काकडासिंगी, सौंठ, तुलसी, दशमूल, कचूर, पिप्पली, शक्कर।	श्वास रोग, दमा, कास में उपयोगी।	1–2 चम्मच दिन में दो बार भोजन उपरांत। बच्चों के लिये– 1 से 3 मि. ली. व्यस्क के लिये– 3 से 6 मि.ली.
			विन्ध्य हर्बल्स पेटेंट चाय		
194	0801	**अर्जुन हर्बल टी (चाय)**	अर्जुन छाल, दालचीनी, लौंग, इलायची	यह ह्रदय टानिक है। इसका लगातार सेवन करने से उच्च रक्तचाप एवं शरीर के लिए स्फूर्ति दायक, कोलेस्ट्राल को कम करने में सहायक होता है।	सुबह–शाम चाय की तरह उबालकर दूध के साथ सेवन करें
195	0802	**विन्ध्य तुलसी चाय**	तुलसी, हल्दी, सौंठ, पिप्पली, कालीमिर्च, पुष्करमूल, वन तुलसी	कास–श्वास, आम पाचक, उदर रोग, कृमि में लाभकारी।	1 चम्मच पानी के साथ उबाल कर।

क्र.	बार कोड	उत्पाद का नाम	शामिल घटक	रोग जिस पर प्रभावकारी	उपयोग विधि
			शास्त्रोक्त आयुर्वेदिक तेल		
196	0901	अरण्ड तेल	अरण्ड बीज	विबंध, अर्श, उदर रोग, वातविकार, त्वचा रोग में उपयेागी।	दिन में दो बार तेल से मालिश एवं पनार्थ गुनगुने दूध या पानी से 5–25 मि. ली. सेवन करें।
197	0902	अश्वगंधा तेल	अश्वगंधा, तिल तेल एवं अन्य।	शक्तिवर्धक, वात रोग, यौन रोग में उपयोगी।	दिन में दो बार तेल से मालिश।
198	0903	बला तेल	बला, गुडूची, रास्ना, दंतीमूल, देवदारू, इलायची, तिल तेल, त्रिजात, कपूर, कूठ, जटामांसी, प्रियंगु, तगर, वच एवं अन्य।	वात–व्याधि, छर्दी, कास–श्वास, ज्वर, मूर्छा में उपयोगी।	अभ्यंग एवं 3 से 6 मि.ली. पनार्थ दूध के साथ।
199	0904	बावची तेल	बावची बीज	महाकुष्ठ, खालित्य, श्वित्र, वण्रशोधक, वण्ररोपन, केश्य में उपयोगी।	मालिश के लिये 2 से 3 बार प्रतिदिन में।
200	0905	**भृंगराज तेल**	तिल तेल, भृंगराज स्वरस, मंजिष्ठ, रक्त चंदन, बला, हरिद्रा, मुलैठी एवं अन्य औषधियां।	यह केशों के खालित्य एवं पालित्य रोगों में, शिरोः रोग, कर्ण रोग में काम आता है, केश मुलायम व सघन होते है तथा रूसी समाप्त हो जाता है । बाल सुन्दर होते हैं।	सिर में प्रतिदिन या एक दिन छोड़कर लगाकर मालिश।
201	0906	ब्रहत्सैंधवादि तेल	सेंधा नमक, गजपिप्पली, रास्ना, सौंफ, यवानी, त्रिकटु, बिड नमक, मुलेठी, वच, अजमोद, पुष्करमूल, एरण्ड तेल एवं अन्य।	आमवात, अर्दित, सन्धि वात, कटिशूल, उरूशूल, जानुशूल में लाभकारी।	प्रतिदिन सुबह–शाम मालिश करें।
202	0907	चक्रमर्द तेल	चक्रमर्द बीज, मालकांगनी, नारियल एवं अन्य औषधियां।	यह तेल हल्का गुनगुना कर मालिश करने से कमर, जांघ, पींडली आदि अंग का दर्द नष्ट हो जाता है एवं चर्मरोग पर लाभदायक।	प्रतिदिन 2 से 3 बार मालिश करें।
203	0908	**चंदनबलालाक्षादि तेल**	रक्त चन्दन, बला जड़, लाख, तिल तेल, सफेद चन्दन खस एवं अन्य औषधियां।	इस तेल की मालिश करने से कास, श्वास, क्षय, वमन, ज्वर, कामला, रक्त प्रदर, रक्त पित्त, कफ के प्रकोप आदि दूर होते हैं तथा शरीर बलवान बनता है।	आवश्यकतानुसार मालिश करें चिकित्सक के परामर्शानुसार।
204	0909	चन्दनादि तेल	श्वेत चन्दन, सुगन्धवाला एवं अन्य औषधियां, तिल का तेल, गौ दूध, लाख।	इस तेल से सारे शरीर में मालिश करना चाहिए यह शरीर के बल और वर्ण को बढ़ाता है। ज्वर, उन्माद को नष्ट करता है।	प्रतिदिन दो बार आवश्यकतानुसार मालिश करें।
205	0910	दशमूल तेल	दशमूल एवं शोधित सरसों तेल, निर्गुण्डी स्वरस।	अपस्मार, ज्वर, उन्माद को नष्ट करता है। शरीर को पुष्ट करता है। वातरोग में उपयोगी।	चिकित्सक की सलाह अनुसार दिन में दो बार तेल से धीरे–धीरे मालिश।
206	0911	जात्यादि तेल	चमेली पत्र, नीमपत्र, तिल तेल एवं अन्य	घाव, फोड़े, फुंसी, त्वचा रोग, यौन रोग में अत्यन्त लाभकारी।	बाहरी उपयोग हेतु प्रभावी अंग में दो से तीन बार प्रतिदिन।
207	0912	करंज तेल	करंज बीज का तेल	खुजली के लिये यह बहुत उपयोगी है। यह ददु, पामा, विसर्प, सर की खुजली आदि त्वचा के रोगों में एवं संधिवात में लाभदायक है।	प्रभावी अंग में दिन में दो से तीन बार लगावें।

क्र.	बार कोड	उत्पाद का नाम	शामिल घटक	रोग जिस पर प्रभावकारी	उपयोग विधि
208	0913	कासिसादि तेल	कसीस, पिप्पली एवं अन्य	अर्श में लाभप्रद।	तेल को प्रभावित जगह पर लगाना है, दो से तीन बार।
209	0914	लाक्षादि तेल	तिल तेल, एरण्ड, लाख, हल्दी, मंजिष्ठा।	ज्वर, अस्थिभग्न, वातपित्त प्रमेह, अपस्मार, उन्माद, बच्चों के लिए मालिश में उपयोगी।	अभ्यंग।
210	0915	महामारिच्यादि तेल	सरसो तेल, गौ–मूत्र, जटामांसी, श्वेत चंन्दन एवं अन्य औषधियां।	कुष्ठ, सूजन, शरीर में चक्कते निकलना और व्रण रोगों में लाभदायक।	प्रभावी अंग में दो से तीन बार लगावें।
211	0916	महामाष तेल	उड़द, दशमूल, गौ दूध, अश्वगंधा, कचूर,तिल तेल, बला जड़, अष्टवर्ग एवं अन्य औषधियां।	यह पक्षाघात, हाथ पैर कांपना, लगड़ापन में लाभकारी है, वात रोग में उपयोगी।	प्रभावी अंग में दिन में दो से तीन बार लगावें।
212	0917	**महानारायण तेल**	शतावरी, दशमूल, बेल, अश्वगंधा, नीम, तिल तेल एवं गंधकी एवं अन्य औषधियां।	समस्त जोड़ों के दर्द, पक्षाघात, वात रोग, व्रणरोपक में अत्यन्त लाभकारी।	दिन में दो बार तेल से मालिश।
213	0918	महाविषगर्भ तेल	धतूरा, कनेर, आक, निर्गुण्डी, शोधित तिल तेल एवं अन्य औषधियां।	समस्त प्रकार के वात रोग, शोथ, साइटिका, जोड़ों के दर्द में उपयोगी।	दिन में दो बार तेल से मालिश।
214	0919	मालकांगनी तेल	मालकांगनी बीज	अनिद्रा, स्मृति दौर्बल्य, वातविकार में उपयोगी।	दिन में दो बार सिर में तेल से मालिश।
215	0920	नीम तेल	नीम बीज तेल	वातहर, त्वचा रोग में उपयोगी।	दिन में दो बार तेल से मालिश।
216	0921	निम्बादि तेल	निम्बोली का तेल, हरताल एवं अन्य	भगंदर एवं घाव भरने में लाभकारी।	रूई से तेल को लगाना है।
217	0922	निर्गुण्डी तेल	निर्गुण्डी पंचांग एवं पत्र का स्वरस, तिल तेल।	वात रोग, जोड़ो में दर्द में उपयोगी।	दिन में दो बार तेल से मालिश।
218	0923	पंचगुण तेल	हरीतिकी, बहेडा, आंवला, नीम, तिल का तेल, मोम, शिलारस, रॉल, गुग्गुलु, कपूर, तारपीन तेल, नीलगिरी का तेल, केजुपुटी तेल।	जोडों के दर्द, जले स्थान हेतु उत्कृष्ट दर्द निवारक होता है।	प्रभावित स्थान पर दिन में दो से तीन बार तेल से मालिश।
219	0924	पिण्ड तेल	मोम, मंजिष्ठा, सर्ज रस, सारिवा, तिल तेल एवं अन्य।	वातरक्त, दाह में उपयोगी।	अभ्यंग।
220	0925	प्रसारणी तेल	प्रसारणी, तिल का तेल, गाय का दूध, कांजी, मुलैठी, पिपलामूल, चित्रकमूल, सेंधा नमक, देवदारू, रास्ना, गजपीपली, भिलावा, बच, सौंफ, जटामांसी, रक्त चंदन एवं अन्य।	हड्डी के अस्थिभग्न एवं च्युत, शरीर के कमजोर अंगों को बल देता है।	प्रभावित स्थान पर दिन में दो से तीन बार तेल से मालिश।
221	0926	षडबिन्दु तेल	एरंडमूल, तगर, जीवंती, रास्ना, सेंधा नमक, वायविडंग, मुलैठी , सौंठ, काला तिल तेल, बकरी का दूध।	नाक व दांत संबंधी उर्द्धाजात्रुगत रोगों में लाभदायक होता है।	4 से 6 बूंद नाक में डालें।
222	0927	**श्रीपर्णी तेल**	गंभारी छाल का क्वाथ, तिल तेल।	स्तन पुष्टिकारक होता है।	दिन में दो से तीन बार तेल से मालिश।

क्र.	बार कोड	उत्पाद का नाम	शामिल घटक	रोग जिस पर प्रभावकारी	उपयोग विधि
223	0928	सोमराजी तेल	बाकुची, हरिद्रा, सरसो, दारू हल्दी, कूट, करंज बीज एवं अन्य।	श्वेत कुष्ठ, कृमि, त्वचा रोग, दाद में उपयोगी।	बाहरी उपयोग हेतु । दिन में दो बार उपयोग के बाद हल्की धूप देकर।
			शास्त्रोक्त विन्ध्य आसव एवं आरिष्ट		
224	1001	**अम्यारिष्ट**	हरड़, मुनक्का, वायबिडंग, महुआ फूल, गुड़, गोखरू, निशोथ, धनिया, धायफूल, इन्द्रायणी जड़, चव्य, सौंफ, सौंठ, दन्तीमूल एवं अन्य।	अर्श, उदर रोग, मलावरोध, मूत्रावरोध, को दूर करता है, अग्नि को प्रदीप्त करता है यह उत्तम सारक मूत्रल और पाचक है। कोष्ठबद्धता पर अत्यंत उपयोगी है।	12 से 24 मि.ली. बराबर मात्रा में जल मिलाकर दिन में दो बार। भोजन उपरान्त।
225	1002	अमृतारिष्ट	गिलोय, दशमूल, जीरा, पित्तपापड़ा, सौंठ, काली मिर्च, पिप्पली, नागरमोथा, कुटकी, अतीस, इन्द्र जौ एवं अन्य।	यह जीर्ण ज्वर, पुराना ज्वर, विषम ज्वर एवं निर्बलता को दूर करता है, प्रमेह, मूत्र दोष, त्वचा रोग उदर शूल, प्लीहावृद्धि, कामला में लाभदायक है, यकृत को मजबूत करता है, रोगप्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है ।	12 से 24 मि.ली. बराबर मात्रा में जल मिलाकर दिन में दो बार भोजन उपरान्त।
226	1003	**अर्जुनारिष्ट**	अर्जुन छाल, द्राक्षा, धायफूल, शहद एवं अन्य।	हृद्यरोग, फुफ्फुस रोग, बलक्षय, वीर्यक्षय में लाभदायक।	12 से 24 मि.ली. बराबर मात्रा में जल मिलाकर दिन में दो बार भोजन उपरान्त।
227	1004	अरविन्दासव	सफेद कमल फूल, खस जड़, गम्भारी, नील कमल, मंजीष्ठ, इलायची, बला जड़, जटामांसी, नागरमोथा, श्वेत अन्तमूल, हरड़, बहेड़ा, बच, आंवला, कचूर एवं अन्य।	यह आसव बालकों के अनेक रोगों को नष्ट करता है एवं पुष्ट बनाता है। खांसी, अपचन, पतले दस्त, उदर रोग में लाभदायक है।	चिकित्सक के परामर्श अनुसार।
228	1005	अशोकारिष्ट	अशोक छाल, धाय फूल, श्वेत जीरा, नागरमोथा, सौंठ, दारू हल्दी, कमल फूल, हरड़, बहेड़ा, आंवला, काला जीरा एवं अन्य।	यह स्त्रियों के रक्त प्रदर, मंद ज्वर, रक्त पित्त, अर्श, अग्निमाद्य, अरूचि आदि विकारों को दूर करता है, गर्भाशय को बल्य प्रदाय करता है एवं इसके विकार दूर करता है, कमर दर्द, सर दर्द, मासिक धर्म के समय दर्द में काफी आराम होता है।	12 से 24 मि.ली. बराबर मात्रा में जल मिलाकर दिन में दो बार। भोजन उपरान्त।
229	1006	**अश्वगंधारिष्ट**	अश्वगंधा, सफेद मूसली, मंजीष्ठ, हरड़, दारूहल्दी, मुलैठी , रास्ना, बिदारी कन्द, अर्जुन छाल, नागरमोथा, निशोथ एवं अन्य।	यह दीपन पाचन, वातनाशक, प्रमेह, बवासीर, मस्तिष्क निर्बलता, वात व्याधियों में लाभकारी है, यह स्फूर्तिदायक, वीर्य की शुद्धि एवं वीर्य की वृद्धि करता है।	12 से 24 मि.ली. बराबर मात्रा में जल मिलाकर दिन में दो बार। भोजन उपरान्त।
230	1007	बबुलारिष्ट	बबूल छाल, पीप्पली, जायफल, कंकोल, इलायची, दालचीनी, तेजपत्र, नागकेशर, लौंग, कालीमिर्च एवं अन्य।	क्षय, त्वचा रोग, कुष्ठ, अतिसार, श्वास–कास।	12 से 24 मि.ली. बराबर मात्रा में जल मिलाकर दिन में दो बार। भोजन उपरान्त।
231	1008	बलारिष्ट	बला (खरेंटी), धायफूल, क्षीरकाकोली, एरण्डमूल, रास्ना, बड़ी इलायची, लौंग, गोखरू एवं अन्य।	यह उत्तम वातनाशक, पुष्टिकारक, बलवर्द्धक और जठराग्नि प्रदीपक है। इसके सेवन से समस्त प्रकार के कठिन से कठिन वातव्याधि रोग नष्ट होते हैं और कास–श्वास, राजयक्ष्मा, प्रमेह तथा बलक्षय में भी लाभकारी है। यह स्नायुमण्डल को भी पुष्ट करता है।	12 से 24 मि.ली. बराबर मात्रा में जल मिलाकर दिन में दो बार। भोजन उपरान्त।

क्र.	बार कोड	उत्पाद का नाम	शामिल घटक	रोग जिस पर प्रभावकारी	उपयोग विधि
232	1009	भृंगराजासव	भृंगराज स्वरस, गुड़, हरड़, पिप्पली, जायफल, लौंग, इलायची, तेजपत्र, दालचीनी, नागकेशर एवं अन्य।	धातुक्षय और कास को दूर करता है यह बलकारक, वाजीकारक होता है, पेट साफ करता है, पित्तविकार, वमन, ज्वर का बार–बार आना, सिर दर्द कमर दर्द, हृदय कमजोरी, यकृत वृद्धि, प्लीहा वृद्धि बालों का टुटना आदि में लाभकारी है।	12 से 24 मि.ली. बराबर मात्रा में जल मिलाकर दिन में दो बार। भोजन उपरान्त।
233	1010	चन्दनासव	सफेद चंदन लकडी, नागरमोथा, नेत्रबला, गंभारीमूल, नीलकमल, प्रियंशु फूल, पदमख, लोध्र, मंजिष्ट, पाठा, चिरायता, बरगदछाल, आमछाल, मोचरस, रक्त चंदन, धवई फूल, मुनक्का, शक्कर एवं अन्य।	बलकारक, शुक्रमेहनाशक, पथरी, मूत्रतंत्र विकार, मूत्र में जलन में उपयोगी।	12 से 24 मि.ली. बराबर मात्रा में जल मिलाकर दिन में दो बार। भोजन उपरान्त।
234	1011	चविकासव	चव्य, चित्रकमूल, डीकामाली, पुष्करमूल, वचा, कचूर, हरीतिकी, बहेड़ा, आंवला, अजवाईन, धनिया, दंतीमूल, परवल जड़, वायविडंग, नागरमोथा, मंजिष्ठ, नागकेशर, पिप्पली, कालीमिर्च, दालचीनी, शीतल चीनी, तेजपत्र, धायफूल एवं अन्य।	आंत, अमाशय संबंधी विकार ग्रहणी, आमपाचक में उपयोगी।	12 से 24 मि.ली. दो–दो चम्मच बराबर मात्रा में जल मिलाकर दिन में दो बार। भोजन उपरान्त।
235	1012	चित्तचन्दिरासव	नागरमोथा, काली मिर्च, चव्य, चित्रकमूल, हल्दी, वायविडंग, आंवला, लोध्र, पटराज, कुटकी, सफेद चंदन, तगर, जटामांसी, दालचीनी, गोदंती, लौंग, नागकेशर एवं अन्य।	पुराना अस्थमा, कफ, मूत्र विकार, कब्जनाशक, मंदाग्नि, प्रमेह में उपयोगी।	12 से 24 मि.ली. बराबर मात्रा में जल मिलाकर दिन में दो बार। भोजन उपरान्त।
236	1013	**दशमूलारिष्ट**	बेलछाल, गंभारी छाल, पाढ़ल छाल, अरलु छाल, अरणी छाल, गोखरू पंचांग, छोटी कटेली पंचांग, बड़ी कटेली पंचांग, पृष्ठापर्णी पंचांग, शालपर्णी पंचांग, चित्रकमूल एवं अन्य।	संग्रहणी, अतिसार, पेचिश, स्त्रीरोग, प्रसूतिरोग, गर्भाशय की अशुद्धि, श्वेत प्रदर आदि रोगों को दूर करता है। यह प्रवाहिका, प्रधान, संग्रहणी के विकार में अतिउपयोगी है।	12 से 24 मि.ली. बराबर मात्रा में जल मिलाकर दिन में दो बार। भोजन उपरान्त।
237	1014	देवदार्व्यारिष्ट	देवदारू, वासा, मंजिष्ठा, कूठ, दंतीमूल, तगर, हरिद्रा, दारूहल्दी, रास्ना, विडंग, नागरमोथा, शिरीष, खदिर, चित्रकमूल, त्रिकटु, चतुरजात एवं अन्य।	प्रमेह, वातरोग, बवासीर, मूत्रकृच्छ्, उदररोग, गृहणी आदि में उपयोगी है।	12 से 24 मि.ली. बराबर मात्रा में जल मिलाकर दिन में दो बार।
238	1015	**द्राक्षारिष्ट**	मुनक्का, दालचीनी, इलायची, तेजपत्र, नागकेशर, प्रियंगु, कालीमिर्च, पिप्पली, वायविडंग, चित्रकमूल, शीतलचीनी, लौंग, धायफूल, बबूल छाल एवं अन्य।	कास–श्वास, क्षय, गले के रोगों को नष्ट करता है, शरीर का बल बढ़ाता है, मल का शोधन करता है, पेट साफ रखता है, पाचन शक्ति बढ़ती है।	12 से 24 मि.ली. बराबर मात्रा में जल मिलाकर दिन में दो बार।

क्र.	बार कोड	उत्पाद का नाम	शामिल घटक	रोग जिस पर प्रभावकारी	उपयोग विधि
239	1016	**द्राक्षासव**	द्राक्षा, शहद, धायफूल, जायफल, लौंग, कंकोल, श्वेत चन्दन, पिप्पली, दालचीनी, इलायची, तेजपत्र, चित्रकमूल, चव्य, पीपरामूल, निर्गुण्डी बीज, नाग केशर, शीतलमिर्च एवं अन्य।	द्राक्षासव गृहणी, अर्श, रक्त गुल्म, उदर रोग, कृमि, नेत्र रोग, पाण्डु, कामला को नष्ट करता है, निर्बलता को दूर करता है, शरीर में उत्साह बढ़ाता है, मल भी शुद्ध होता है।	12 से 24 मि.ली. बराबर मात्रा में जल मिलाकर दिन में दो बार। भोजन उपरान्त।
240	1017	कालमेघासव	कालमेघ, गिलोय, सप्तपर्ण, कुटकी, करंज पंचांग, कुटज, धायफूल, सौंठ, काली मिर्च, दालचीनी, बबूल छाल, सरपोंखा मूल, घृतकुमारी रस, व अन्य।	सभी प्रकार के विषमज्वर, मलेरिया, टायफायड, पीलिया में अत्यन्त उपयोगी।	12 से 24 मि.ली. बराबर मात्रा में जल मिलाकर दिन में दो बार। भोजन उपरान्त।
241	1018	**कनकासव**	अडूसा जड़, धतूरा पंचांग, मुलैठी , सौंठ, भारंगी, तालिसपत्र, लोंग, पिप्पली, कटेली, नागकेसर, बीज रहित अंगूर, शक्कर, शहद एवं अन्य।	सांस लेने में तकलीफ, अस्थमा, सूखी खांसी, विषम ज्वर, रक्तपित्त विकार में अत्यन्त उपयोगी।	12 से 24 मि.ली. बराबर मात्रा में जल मिलाकर दिन में दो बार। भोजन उपरान्त।
242	1019	खदिरारिष्ट	खैर, देवदारू, बाकुची, दारूहल्दी, हरड़, बहेड़ा, आंवला, शहद, मिश्री, धायफूल, शीतलमिर्च, नागकेशर, जायफल, लौंग, इलायची, दालचीनी, तेजपत्र, पिप्पली एवं अन्य।	कुष्ठ, पाण्डु, हृदय रोग, कृमि, श्वास, रक्त विकार, प्लीहावृद्धि, गुल्म आदि विकार समाप्त होते हैं । यह उत्तम रक्त शोधक है इसका प्रभाव रक्त, त्वचा एवं आंत्र पर होता है।	12 से 24 मि.ली. बराबर मात्रा में जल मिलाकर दिन में दो बार। भोजन उपरान्त।
243	1020	**कुमारीआसव–बी**	कुमारी रस (पत्ती), हरीतकी, शहद, धायफूल, जायफल, घृत कुमारी स्वरस, लौंग, कबाबचीनी, जटामांसी, चव्य, चित्रकमूल, जावित्री, काकड़ासिंगी, बहेड़ा, पुष्करमूल, ताम्रभस्म, लौह भस्म एवं अन्य।	यह आसव स्त्रियों के दोष,. ऋतु दोष, गुल्म, प्लीहा, खांसी, श्वास, उदर रोग, क्षय, वात रोग, उदरशूल आदि मिटते हैं, पाचन शक्ति बढ़ती है, मूत्रल, बल्य, शोथ, दाहनाशक होता है।	12 से 24 मि.ली. बराबर मात्रा में जल मिलाकर दिन में दो बार। भोजन उपरान्त।
244	1021	कुटजारिष्ट	कुड़े की छाल, द्राक्षा, महुआफूल, गम्भारी छाल, धायफूल एवं अन्य।	संग्रहणी, अतिसार, पेचिश, मंदाग्नि, ज्वर, आदि रोगों को दूर करता है। यह प्रवाहिका, प्रधान, संग्रहणी के विकार में अतिउपयोगी है, बार–बार कम मल आना, रक्त गिरना, पेट में मरोड़ आना में यह अत्यंत लाभकारी है।	12 से 24 मि.ली. बराबर मात्रा में जल मिलाकर दिन में दो बार। भोजन उपरान्त।
245	1022	जीरकारिष्ट	स्वेत जीरा, जातिफल, सौंठ, नागरमोथा, दालचीनी, इलायची, तेजपत्र, यवानी, कंकोल, लौंग, गुड़, धवईफूल एवं अन्य।	शुक्रमेह, मूत्राघात, हृदय रोग, कमजोरी, सूतिकारोग, अरूचि, उदररोग।	12 से 24 मि.ली. बराबर मात्रा में जल मिलाकर दिन में दो बार। भोजन उपरान्त।

क्र.	बार कोड	उत्पाद का नाम	शामिल घटक	रोग जिस पर प्रभावकारी	उपयोग विधि
246	1023	लोध्रासव	लोध्र, मूर्वा, कपूरकचरी, वायबिडंग, भारंगी, तगर, नागरमोथा, अतिविषा, चतुर्जात, त्रिफला एवं अन्य।	प्रमेह, अरूचि, ग्रहणी, गर्भाशयशोथ, अर्श, कुष्ठ, कृमि एवं पाण्डु में लाभकारी।	12 से 24 मि.ली. बराबर मात्रा में जल मिलाकर दिन में दो बार। भोजन उपरान्त।
247	1024	लोहासव	लौह भस्म, सौंठ, मिर्च, पिप्पली, हरड़, बहेड़ा, आंवला, अजवाइन, वायबिडंग, नागरमोथा, चित्रक जड़, धायफूल, शहद एवं अन्य।	पाचकाग्नि को प्रदीप्त करता है, पाण्डु, शोथ, गुल्म, उदर रोग, प्लीहा वृद्धि, जीर्ण ज्वर, कास–श्वास, अरूचि और हृदय रोग को नष्ट करता है ।	12 से 24 मि.ली. बराबर मात्रा में जल मिलाकर दिन में दो बार। भोजन उपरान्त।
248	1025	पत्रांगासव	पतंग, खैरसार, सेमल के फूल, खरेटी, शुद्ध भिलावा, सारिवा, गुड़हल, आम की गुठली, चिरायता, सफेद जीरा, लौह भस्म, दालचीनी एवं अन्य।	श्वेत प्रदर, रक्त प्रदर, कष्टार्तव, ज्वर, पाण्डु, सूजन, अरूचि, अग्निमांद्य, गर्भाशय आदि रोगों में उपयोगी।	12 से 24 मि.ली. बराबर मात्रा में जल मिलाकर दिन में दो बार। भोजन उपरान्त।
249	1026	पिप्पलाद्यासव	पिप्पली, कालीमिर्च, चव्य, चित्रक, वायबिडंग, उशीर, चंदन, कुष्ठ, तगर, लौंग, जटामांसी, त्रिजात एवं अन्य।	ग्रहणी, गुल्म, क्षय, अर्श, पाण्डु एवं ज्वर आदि रोगों में उपयोगी।	12 से 24 मि.ली. बराबर मात्रा में जल मिलाकर दिन में दो बार। भोजन उपरान्त।
250	1027	**पुनर्नवासव**	सोंठ, कालीमिर्च, पिप्पली, हरीतकी, बहेड़ा, आंवला, दारूहल्दी, गोखरू, छोटी इलायची, बड़ी कटेली, अडूसा पत्ती, एरण्ड की जड़, कुटकी, गजपीपल, पुनर्नवा, नीम अनार छाल, गिलोय एवं अन्य।	उदर रोग, शोथ, प्लीहा वृद्धि, यकृत वृद्धि, गुल्म, ज्वर आदि रोगों को दूर करता है, इनमें से किसी भी विकार में शोथ (सूजन) आने पर उसे दूर करता है, हृदय को सबल बनाता है, लीवर, किडनी की क्षमता बढ़ाता है।	12 से 24 मि.ली. बराबर मात्रा में जल मिलाकर दिन में दो बार। भोजन उपरान्त।
251	1028	रोहितकारिष्ट	रोहितक, पिप्पली, चव्य, चित्रक, सौंठ, त्रिफला, इलायची एवं अन्य।	प्लीहावृद्धि, ग्रहणी, उदर रोग, गुल्म, अर्श, कामला, कुष्ठ एवं शोथ रोगों में लाभकारी।	12 से 24 मि.ली. बराबर मात्रा में जल मिलाकर दिन में दो बार। भोजन उपरान्त।
252	1029	**सारस्वतारिष्ट**	ब्राम्ही पंचांग, सतावर, बिदारी कंद, हरड़, अदरक, नेत्रवाला, सौंफ, शहद, कालीमिर्च, धायफूल, रेणुक बीज, पिप्पली, वच, असगन्ध, गिलोय, वायबिडंग, निशोथ, लौंग, कूट, बहेड़ा, इलायची, दालचीनी, एवं अन्य ।	मेधावृद्धि और कांति को बढ़ाता है, वाणी को शुद्ध करता है यह उत्तम हृदय रसायन है, बालक, युवा, वृद्ध सभी के लिए हितकारी है।	12 से 24 मि.ली. बराबर मात्रा में जल मिलाकर दिन में दो बार। भोजन उपरान्त।
253	1030	सारिवाद्यासव	सारिवा, नागरमोथा, लोध्र, पिप्पली, पाठा, गुडूची, श्वेत चंदन, रक्त चंदन, कुटकी, तेजपत्र, कूठ, स्वर्णपत्री एवं अन्य।	उत्तम रक्तशोधक है, रक्तविकार, प्रमेह, उपदंश, भगंदर, अग्निमांद्य में उपयोगी।	12 से 24 मि.ली. बराबर मात्रा में जल मिलाकर दिन में दो बार। भोजन उपरान्त।

क्र.	बार कोड	उत्पाद का नाम	शामिल घटक	रोग जिस पर प्रभावकारी	उपयोग विधि
254	1031	**त्रिफलारिष्ट**	हरड़, बहेडा, आंवला, पिप्पली, चित्रकमूल, अजवायन, वायबिडंग, लौह भस्म एवं अन्य।	इस आसव से रक्त की वृद्धि होती है, हृदय रोग, घबराहट, फेफड़े की कमजोरी, पाण्डु शोथ, अर्श, प्रमेह, संग्रहणी आदि रोगों में काम आता है।	12 से 24 मि.ली. बराबर मात्रा में जल मिलाकर दिन में दो बार। भोजन उपरान्त।
255	1032	उशीरासव	खस, हाउबेर, कमल, प्रियंगु, पठानी लोध्र, मंजिष्ठा, कपूरकचरी, मुनक्का, पटोल, पाठा एवं अन्य।	यह प्रकृति में शीत होता है, रक्त पित्त, पाण्डु, प्रमेह, कुष्ठ, कृमि एवं शोथ व सभी पित्तज विकारों में उपयोगी है।	12 से 24 मि.ली. बराबर मात्रा में जल मिलाकर दिन में दो बार। भोजन उपरान्त।
256	1033	वरूणासव	वरूणछाल, शीशमछाल, पोखरमूल, चित्रकमूल, सहजनछाल, दशमूल, देवदारू, कटेली, दाभजड, बलछड, बड़ी कटेरी, खिरनी, शतावर, गम्भारी छाल, अर्जुन छाल, गजपीपल, खरेटी, काकड़ासिंगी, सोवा, कचूर व अन्य ।	मूत्रतंत्र विकार, पथरी, कफ, बबासीर, गर्भाशय विकारों में उपयोगी है। वृक्क की पथरी निकालने में लाभकारी है।	12 से 24 मि.ली. बराबर मात्रा में जल मिलाकर दिन में दो बार। भोजन उपरान्त।
257	1034	वासकासव	वासा, धातकी, दालचीनी, इलायची, तेजपत्र, कंकोल, सोंठ, कालीमिर्च, पिप्पली, नागकेशर, हउबेर, एवं अन्य।	कास, रक्तपित्त, क्षय, शोथ एवं श्वास, श्वसन तंत्र संबंधी सभी संक्रमण में लाभकारी है।	12 से 24 मि.ली. बराबर मात्रा में जल मिलाकर दिन में दो बार। भोजन उपरान्त।
258	1035	विडंगारिष्ट	वायवडंग, पिप्पली, रास्ना, कुडा छाल, इन्द्र जौ, पाठा, एलुआ, आंवला, धायफूल, शहद, दालचीनी, इलायची, तेजपत्र, कचनार छाल, मिर्च, पिप्पली एवं अन्य ।	यह कृमिनाशक दीपन पाचन, ग्राही, कीटाणु नाशक एवं आंत्रशोधक है पाचन क्रिया बढ़ाता है, उदर कृमि भी नष्ट होते हैं।	12 से 24 मि.ली. बराबर मात्रा में जल मिलाकर दिन में दो बार। भोजन उपरान्त।
			शास्त्रोक्त वटी / गुटिका		
259	1101	**आरोग्यवर्द्धिनी वटी**	शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक, लौह भस्म, अभ्रक भस्म, ताम्र भस्म, त्रिफला, शुद्ध शिलाजीत, शुद्ध गुग्गुलु, चित्रक छाल, कुटकी, नीम पत्ती एवं अन्य।	उत्तम पाचन, दीपन, शोधन करनेवाला, हृदय बल्य वर्धक, मल शुद्धिकारक, त्वचारोग, यकृत–प्लीहा, वृक्क, गर्भाशय, आन्त्र आदि के शोथ में, जीर्ण ज्वर, जलोदर और पाण्डु रोग में लाभदायक।	2–4 गोली रोगानुसार जल या दूध से।
260	1102	अग्नितुण्डी वटी	,शुद्ध पारा, शुद्ध वत्सनाभ, शुद्ध गंधक, अजवाइन, हरड, बहेडा, आवंला, चित्रकमूल, सेंधानमक, सफेद जीरा, सोचल नमक, वायविडंग, समुद्री नमक,शुद्ध सुहागा व अन्य।	मंदाग्नि, अफरा, शूल, आमातिसार, अजीर्ण, निर्बलता, आमवात, वातरोगों में उपयोगी।	1–2 गोली प्रति दिन भोजन के बाद।

क्र.	बार कोड	उत्पाद का नाम	शामिल घटक	रोग जिस पर प्रभावकारी	उपयोग विधि
261	1103	एलादि गुटिका	बडी इलायची, मुलैठी , तेजपत्र, दालचीनी, छुआरा, मिश्री, शहद एवं अन्य।	सूखी खांसी, क्षय की खांसी, रक्त–पित्त, मुंह से खून गिरना, ज्वर, वमन, मूर्च्छा, प्यास, जी घबराना, स्वरभेद और पित्त के विकारों में बहुत लाभदायक है एवं यह पित्तशामक और कफदोष दूर करने वाली है।	1–1 गोली जल/दूध से लें या 3–4 गोली प्रतिदिन चूसें।
262	1104	ब्राम्ही वटी	ब्राम्ही पत्र, वंग भस्म, स्वर्ण सिंदूर, शुद्ध अभ्रक भस्म, शुद्ध शिलाजीत, मरिच, पिप्पली, वायविडंग, शुद्ध कस्तूरी एवं अन्य।	स्मरण शक्ति बढ़ाता है, जीर्ण ज्वर, मस्तिष्क दौर्बल्य, प्रसूति ज्वर, प्रलेपक ज्वर, स्मृति विभ्रंश आदि रोगों में लाभकारी।	1–2 गोली दिन में दो बार दूध के साथ।
263	1105	**चन्द्रप्रभा वटी**	कपूर, बच, नागरमोथा, चिरायता, गिलोय, देवदारू, हल्दी, अतीस, दारू हल्दी, पीपरामूल, चित्रक, धनिया, त्रिफला, चव्य, वायविडंग, गजपीपल, सौंठ, काली मिर्च, स्वर्णमाक्षिक भस्म, सज्जीक्षार, जवाखार, सेंधा नमक, काला नमक, काला निशोथ, दंतीमूल, तेजपत्र, दालचीनी, वंशलोचन, लौह भस्म एवं अन्य।	मूत्रकृच्छ, मूत्राघात, पथरी, प्रमेह, स्त्रियों के गर्भाशय विकार, पुरूषों में धातु संबधी विकार व मूत्रवह संस्थान की सफाई करने में सहायक है।	2–4 गोली दिन में दो से तीन बार जल के साथ।
264	1106	**चित्रकादि वटी**	चित्रक छाल, पीपलामूल, जवाखार, सज्जीखार, सोंचर नमक, बिड नमक, काला नमक, सेंधा नमक, सांभर नमक, त्रिकटु, अजमोद, चव्य, शुद्ध हींग, नींबू एवं अन्य।	आम दोषनाशक, अग्निप्रदीपक, आंव, पेचिश एवं मरोड में अत्यन्त लाभकारी।	2–4 गोली दिन में तीन बार जल के साथ।
265	1107	गंधक वटी	शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक, सौंठ, मरिच, लौंग, सेंधा नमक, सौवर्चल नमक, मुलिका क्षार, नींबू रस एवं अन्य।	अग्निमंद, अजीर्ण, पाचन शक्ति को ठीक करने में सहायक एवं भूख ना लगना आदि में लाभकारी।	1–2 गोली दिन में दो बार उष्ण जल के साथ।
266	1108	हिंग्वादि वटी	शुद्ध हींग, अम्लवेत, सोंठ, काली मिर्च, पिपरामूल, अजवाइन, सेंधा नमक, काला नमक, समुद्र नमक एवं अन्य।	अग्निमांद्य, अरूचि, अपच आदि में लाभकारी व पाचन क्रिया को ठीक करती है।	2–4 गोली दिन में दो से तीन बार जल के साथ।
267	1109	कांकायन वटी (अर्श)	हरीतिकी, काली मिर्च, जीरा, बडी इलायची, पीपरामूल, चव्य, चित्रकमूल, सोंठ, शुद्ध भिलावा, जिमीकंद, यवक्षार एवं अन्य	खूनी बबासीर, पीलिया, पेट दर्द, भूख में कमी, अपच आदि रोगों को ठीक करता है।	2–4 गोली दिन में दो बार मट्ठा के साथ।
268	1110	कांकायन वटी (गुल्म)	कचूर, पोहकरमूल, दंती, चित्रकमूल, सोंठ, वचा, निशोथ, अरहरमूल, हींग, जवाखार, काली मिर्च, धनिया, कालोंजी, अजमोद, नीबू स्वरस एवं अन्य।	पेट में छाले, बवासीर, हृदय विकार, कृमि रोगों में प्रभावकारी।	2–3 गोली दिन में तीन बार गर्म जल/घी या दूध के साथ या चिकित्सक की सलाह से।

क्र.	बार कोड	उत्पाद का नाम	शामिल घटक	रोग जिस पर प्रभावकारी	उपयोग विधि
269	1111	खदिरादि वटी	कत्था, जावित्री, कपूर, कंकोल व अन्य	मुंह में छाले पड़ने और पक जाने पर इस बटी को मुंह में रख कर धीरे–धीरे चूसना चाहिए। स्वर भंग में भी इसके चूसने से लाभ होता है, कफ पिघल कर निकल जाता है एवं कास–श्वास रोग में उपयोगी।	1–1 गोली मुंह में रखकर बार–बार चूंसें।
270	1112	**कुटजघन वटी**	कूडा जड़/छाल, अतीस एवं अन्य।	अतिसार, ग्रहणी, अमीबिओसिस, पेचिश एवं ज्वर में जब पतले दस्त हो तो इसका उपयोग लाभदायी।	2–4 गोली दिन में 3–4 बार ठंडे जल के साथ।
271	1113	लहशुनादि वटी	लहसुन, जीरा, शुद्ध हींग, सोंठ, पिप्पली, काली मिर्च, शुद्ध गंधक, सेंधा नमक, नींबू स्वरस एवं अन्य।	यह पेट में वायु भर जाने की उत्तम दवा है। इसके सेवन से मंदाग्नि, उदर वायु, पेट दर्द दूर होता है या बार–बार चूसें और यह दीपन–पाचक तथा वायुनाशक है।	2–4 गोली दिन में 3 बार जल से अथवा मट्ठे से।
272	1114	लवंगादि वटी	मरिच, लौंग, विभीतकी, बबूल एवं अन्य।	कास, श्वास एवं श्वसन संबंधी रोगों में लाभकारी।	1–2 गोली दिन में दो बार उष्ण जल के साथ।
273	1115	प्रभाकर वटी	स्वर्णमाक्षिक भस्म, लौह भस्म, अभ्रक भस्म, शुद्ध शिलाजीत, अर्जुन छाल एवं अन्य ।	हृदय, फेफडों को बल मिलता है, हृदय की अनियमित गति, सांस फूलना, रक्त की कमी तथा यकृत वृद्धिजन्य रोगों में लाभदायक।	1–2 गोली शहद के साथ दिन में दो बार अर्जुन क्वाथ से।
274	1116	रजःप्रवर्तिनी वटी	कन्या सार, शुद्ध कसीस, हिंगु, शुद्ध टंकण एवं अन्य।	रजोरोध, कष्टार्तव, आर्तव वेदना में लाभकारी।	1–2 गोली दिन में दो बार उष्ण जल के साथ या कुलत्थ क्वाथ, तिल क्वाथ के साथ।
275	1117	**संजीवनी वटी (विशेष)**	वायबिडंग, सोंठ, पिप्पली, त्रिफला, वचा, गिलोय, शुद्ध भिलावा, शुद्ध वत्सनाभ, शुद्ध हिंगुल एवं अन्य।	ज्वर, अपच, कृमि, पेटदर्द, अतिसार, सन्नीपात ज्वर, अजीर्ण, विसूचिका, सर्पविष में लाभकारी।	2–3 गोली दिन में दो बार अदरक स्वरस या जल के साथ।
276	1118	**संशमनी वटी**	गिलोय एवं अन्य।	जीर्ण ज्वर, ज्वर, विषम ज्वर, राजयक्ष्मा, पाण्डू एवं सभी प्रकार के ज्वर में लाभकारी।	2–4 गोली दिन में दो बार पानी के साथ।
277	1119	**शंख वटी**	इमली क्षार, पंच लवण, नींबू स्वरस, शोधित शंखभस्म, शोधित हिंगुल, शुद्ध पारा, शुद्ध वत्सनाभ, शोधित गंधक व पिप्पली एवं अन्य।	उदर विकार, ग्रहणी, शूल, पेटदर्द, डायरिया, तिल्ली संबंधी विकार, पेट में गैस बनना, खाना न पचना आदि में अत्यन्त लाभकारी।	1–2 गोली दिन में दो बार शहद या मट्ठा या जल के साथ भोजन के बाद।
278	1120	**शिलाजतु वटी**	ुद्ध शिलाजीत, शुद्ध गुग्गुलु, लौह भस्म, बंग भस्म, स्वर्णमाक्षिक भस्म एवं अन्य।	मधुमेह (डायबिटीज) एवं समस्त प्रमेह रोगों में, मूत्रवह संस्थान संबंधी रोगों में लाभकारी एवं बल्य है।	2–3 गोली जल या शहद या दूध के साथ।
279	1121	शुक्रमातृका वटी	गोखरू, त्रिफला, तेजपत्र, एला, दारूहरिद्रा, धनिया, चव्य, श्वेत जीरा, तालीश पत्र, दाड़िम, शुद्ध टंकण, शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक, शुद्ध अभ्रक भस्म, शुद्धलौह एवं अन्य।	शुक्रमेह, प्रमेह, अश्मरी, मूत्रकृच्छ, अग्निमांद्य, दौर्बल्य, ज्वर, मूत्रवह संस्थान पर प्रभावकारी।	1–2 गोली दिन में दो बार जल या दूध के साथ।
280	1122	सुखविरेचन वटी	जमालगोटा, सौंठ एवं अन्य।	अर्श विबंध, विरेचनार्थ उपयोगी।	1–2 गोली दिन में दो बार उष्ण जल के साथ।

क्र.	बार कोड	उत्पाद का नाम	शामिल घटक	रोग जिस पर प्रभावकारी	उपयोग विधि
			शास्त्रोक्त रस		
281	1201	आमवातारि रस	शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक, त्रिफला, चित्रक, गुग्गुलु, एरण्ड तेल एवं अन्य।	आमवात समस्त वात–व्याधियों में लाभकारी व आमपाचक की श्रेष्ठ औषधि है।	1–2 गोली जल या एरण्ड तेल के साथ।
282	1202	अग्निकुमार रस	काली मिर्च, बच, कुट्ज, नागरमोथा, शुद्ध पारद, शुद्ध गंधक, शुद्ध वत्सनाभ, सौंठ, बडी इलायची, लौह भस्म, अजमोद, शुद्ध टंकण, शुद्ध अभ्रक भस्म, चित्रकमूल एवं अन्य।	भूख न लगना, अम्लीयता, सिरदर्द, उदरविकार में लाभकारी।	1–2 गोली जल के साथ सुबह–शाम।
283	1203	अर्शकुठार रस	शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक, लौह भस्म, शुद्ध अभ्रक भस्म, बेल गूदा, चित्रकमूल, शुद्ध कलिहारी जड़, काली मिर्च, शुद्ध सुहागा, यवक्षार, सेंधा नमक, गौमूत्र एवं अन्य।	खूनी बवासीर, विबन्ध भगंदर, अर्श एवं रक्तस्त्राव में अत्यन्त लाभकारी है।	1–2 गोली दिन में दो–तीन बार मट्ठा या जल के साथ।
284	1204	बोलबद्ध रस	शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक, गिलोयसत्व, बीजाबोल, सेमल छाल क्वाथ एवं अन्य।	अर्श, विद्रधि, भंगदर, रक्तप्रदर, मूत्रकृच्छ्र, वात रक्त, उत्तम रक्त स्तंभक है।	1–2 गोली दिन में 2 बार मक्खन, शहद व मिश्री से।
285	1205	चन्द्रकला रस	शुद्ध पारद, ताम्र भस्म, अभ्रक भस्म, शुद्ध गंधक, मुस्ता क्वाथ, दाडिम स्वरस, दुर्वा स्वरस, कतकी स्वरस, गौ दुग्ध, सहदेवी, रामशीतला, शतावरी स्वरस, कुटकी, गिलोय, परपट, खस (उसीर), माधवी लता, श्वेत चंदन, सारिवा, द्राक्षा कषाय एवं अन्य।	पित्त रोग, वात पित्त, अंतरदाह, बाह्यदाह, ज्वर, भ्रम, मूत्रकृच्छ, रक्त प्रदर आदि रोगों में लाभकारी है।	1–2 गोली दिन में 2 बार शहद व उष्ण जल से।
286	1206	चन्द्रामृत रस	त्रिफला, त्रिकटु, चव्य, धनिया, जीरा, सेंधा नमक, शुद्ध पारद, शुद्ध गंधक, अभ्रक भस्म, शुद्ध टंकण, वासा स्वरस।	कास, श्वास, ज्वर, श्वसन संस्थान संबंधी विकारों को नष्ट करने में सहायक।	1–2 गोली शहद, पान पत्र स्वरस अथवा अदरक स्वरस के साथ दिन में दो बार।
287	1207	एकांगवीर रस	शुद्ध गंधक, रस सिंदूर, कांतलौह, तीक्ष्ण लौह, अभ्रक भस्म, नाग भस्म, ताम्र भस्म, वंग भस्म पिप्पली, सौंठ, काली मिर्च, त्रिफला क्वाथ एवं अन्य।	पक्षाघात, अर्दित, धनुर्वात, गृध्रसी आदि रोगों में लाभकारी एवं सभी प्रकार के वातरोगों में अत्यन्त लाभकारी है।	125–250 मि.ग्रा. दिन में दो बार शहद अथवा पानी के साथ।
288	1208	गन्धक रसायन	शद्ध पारा, शद्ध गंधक, सौंठ, काली मिर्च, सेंधा नमक, सोंचर नमक, मुल्कक्षार, नीबू स्वरस एवं अन्य।	त्वचारोग, कुष्ठ, वातरोग, जीर्ण ज्वर, डायरिया में लाभकारी।	1–2 गोली दिन में दो बार गर्म जल या नींबू रस के साथ।

क्र.	बार कोड	उत्पाद का नाम	शामिल घटक	रोग जिस पर प्रभावकारी	उपयोग विधि
289	1209	हृदयार्णव रस	शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक, ताम्र भस्म, भावना– त्रिफला क्वाथ एवं काकमाची स्वरस।	हृदय रोग एवं फुफ्फुस रोग, हृदय के लिए उत्तम रसायन है।	125–250 मि.ग्रा. दिन में दो बार शहद अथवा अर्जुन क्वाथ के साथ।
290	1210	इच्छाभेदी रस	सौंठ, कालीमिर्च, शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक, शुद्ध टंकण, शुद्ध जयपाल।	अनाह, उदर रोग, विरेचनार्थ एवं इसकी थोड़ी सी मात्रा किसी भी प्रकार के विबंध को नष्ट करती है।	1 गोली ठण्डे पानी से एवं चिकित्सक के परामर्शानुसार।
291	1211	कृमि कुठार रस	कपूर, कुटज, त्रायमान, अजवाइन, वायविडंग, शुद्ध हिंग, शुद्ध वत्सनाभ, नागकेशर, विजया बीज, पलास बीज, मूसाकर्णी एवं अन्य।	कृमि रोग, पेट के कीड़े निकालने में लाभकारी।	125–250 मि.ग्रा. दिन में दो बार शहद व स्वर्ण क्षीर मूल क्वाथ के साथ।
292	1212	लक्ष्मीविलास रस (नारदीय)	शुद्ध अभ्रक भस्म, शुद्ध गंधक, कपूर, जातीफल, शोधित धतूरा बीज, विदारीकंद, शतावर, नागबला, अतिबला, गोक्षुर, नागवली एवं अन्य।	श्वास–कास, पेट व मूत्र संबंधी विकार, आंत विकार, कान, नाक संबंधी बीमारी, बबासीर, टी.बी. आदि व अनुपान के अनुसार सभी प्रकार के रोगों में लाभकारी।	1–2 गोली शहद, दूध या पान पत्र रस के साथ ले, चिकित्सक की सलाह पर अदरक, तुलसी स्वरस या चिकित्सक के परामर्श अनुसार।
293	1213	लीलाविलास रस	शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक, ताम्र भस्म, अभ्रक भस्म, वंशलोचन, त्रिफला एवं अन्य।	अम्ल–पित्त, दाह संबंधी सभी प्रकार के रोगों में लाभकारी।	1–2 गोली शहद से।
294	1214	महावात विध्वंसक रस	शुद्ध पारद, शुद्ध गंधक, नाग भस्म, वंग भस्म, लौह भस्म, ताम्र भस्म, अभ्रक भस्म, पिप्पली, शुद्ध टंकण, कालीमिर्च, सौंठ, शुद्ध वत्सनाभ, भावना– त्रिकटु क्वाथ, त्रिफला, चित्रक, भृंगराज, कुष्ठ क्वाथ, निर्गुण्डी पत्र स्वरस, अर्क दूध, अमलकी स्वरस, अदरक स्वरस, निम्ब स्वरस।	सभी प्रकार के वातविकार, शूल, मूढ़ता, संधिवात, गृध्रसी, अर्श, पक्षाघात, अर्दित शूल आदि रोगों में उपयोगी।	125–250 मि.ग्रा. अदरक स्वरस, भृंगराज स्वरस, शहद या घी के साथ।
295	1215	नागार्जुनाभ्र रस	शुद्ध अभ्रक, अर्जुन छाल क्वाथ एवं अन्य।	हृदय विकार, बवासीर, भगंदर, विषम ज्वर, भूख में कमी, पेट विकार, हृदय विकारों की उत्तम औषधि।	1–2 गोली दिन में दो बार जल के साथ अथवा अर्जुन क्वाथ से।
296	1216	प्रदररिपु रस	शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक, शुद्ध नाग भस्म, लोध्र एवं अन्य।	सोम रोग, श्वेत प्रदर, प्रदर रोगों पर अत्यन्त प्रभावकारी।	125–250 मि.ग्रा. दिन में दो बार शहद अथवा पानी के साथ।
297	1217	प्रतापलंकेश्वर रस	शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक, शुद्ध बच्छनाभ, चित्रकमूल, अभ्रक भस्म, लोहभस्म, शंखभस्म, आरने कंडों की राख।	उन्माद, खांसी, सिरदर्द, वमन, अतिसार, प्रसवोपरान्त होने वाली विकारों में अत्यन्त लाभकारी।	1–2 गोली दिन में 2 बार अदरक रस व शहद से।
298	1218	प्रवाल पंचामृत रस	मुक्ताभस्म, शंख भस्म, शुक्ति भस्म, कपर्दिका भस्म, प्रवाल भस्म, अर्क दुग्ध।	अनाह, गुल्म, उदर रोग, प्लीहा रोग, कास–श्वास, अग्निमांद्य, ग्रहणी, अतिसार, हृदय रोग व पाचन संबंधी में उपयोगी।	125 से 250 मि.ग्रा. दिन में दो बार जल या शहद के साथ।

क्र.	बार कोड	उत्पाद का नाम	शामिल घटक	रोग जिस पर प्रभावकारी	उपयोग विधि
299	1219	शिरःशुलादिवज्र रस	शुद्ध पारद, शोधित गंधक, शोधित लोह भस्म, शुद्ध ताम्र भस्म, शुद्ध गुग्गुलु, त्रिफला, कूठ, मुलैठी , सौंठ, पिप्पली, गोक्षुर, वायविडंग, दशमूल क्वाथ भावना, घी एवं अन्य।	सिरदर्द, वात–पित्त–कफ, शिरःशूल, उदररोग, अर्धावभेद, सूर्यावर्त, आदि रोगों में लाभकारी।	2–3 गोली दिन में दो बार जल या दूध के साथ।
300	1220	स्मृति सागर रस	शुद्ध पारद, शुद्ध गंधक, शुद्ध मेनशिल, ताम्र भस्म, एवं अन्य।	अपस्मार, स्मृमि दौर्बल्य, उन्माद, अनिद्रा, आदि रोगों पर अच्छा लाभदायक।	1–2 गोली दिन में दो बार जल या शहद के साथ।
301	1221	सोमनाथ रस	लौहभस्म, शद्ध पारा, शुद्ध गंधक, तेजपत्र, हरिद्रा, दारूहरिद्रा, जामुन की गुठली, खस, गोखरू, वायविडंग, श्वेत जीरा, पाठा, आंवला, अनारदाना, शुद्ध सुहागा, श्वेत चंदन शुद्ध, गुग्गल, रसांजन, लोध्र एवं अन्य।	सोम रोग, प्रदर रोग, बहूमूत्रता आदि रोगों में लाभकारी।	125–250 मि.ग्रा. दिन में दो बार शहद अथवा पानी के साथ।
302	1222	सूतशेखर रस (स्वर्ण रहित)	शुद्ध पारद, शुद्ध गंधक, रौप्य भस्म, त्रिकटु, शोधित धतूरा बीज, शुद्ध टंकन भस्म, शुद्ध ताम्र भस्म, त्रिजात, नागकेसर, शंख भस्म, बेलगिरी, नरकचूर एवं अन्य।	मूत्र संबंधी विकार, अम्लपित्त, उदरविकार, वातशामक, पाचन संस्थान संबंधी सभी प्रकार के रोगों में लाभकारी।	1–2 गोली दिन में दो बार शहद के साथ भोजन के बाद।
303	1223	श्वास कुठार रस	शुद्ध पारद, शुद्ध गंधक, शुद्ध वत्सनाभ, शोधित सुहाग फूल, शुद्ध मैनसिल, काली मिर्च, सौंठ, पिप्पली एवं अन्य।	कफ, कास–श्वास हिक्का में उपयोगी श्वसन संस्थान पर प्रभावकारी।	1–2 गोली दिन में दो बार अदरक के स्वरस के साथ भोजन के बाद।
304	1224	त्रिभुवनकीर्ति रस	शुद्ध हिंगुल, शुद्ध वत्सनाभ, त्रिकटु, शुद्ध टंकण, पिप्पलीमूल, तुलसी स्वरस, अभ्रक स्वरस, धतूरा स्वरस, निर्गुण्डी स्वरस।	वात–कफज्वर, सन्निपात ज्वर, तरूण ज्वर, समस्त ज्वरों में लाभदायक।	125–250 मि.ग्रा. दिन में दो बार शहद, अदरक स्वरस अथवा तुलसी स्वरस के साथ।
305	1225	वातगजांकुश रस	रससिंदूर, लोहभस्म, सुवर्णमाक्षिक भस्म, शुद्ध गंधक, शुद्ध हरताल, शुद्ध बत्सनाभ, बड़ी हरड़ काकड़ासीगीं, सोंठ, कालीमिर्च, पिप्पली, अरणी की छाल और शुद्ध सोहागे के फूल, गोरखमुण्डी एवं निर्गुण्डी पत्र रस व अन्य।	वात रोग, गृध्रसी, उरूस्तम्भ, हनुस्तम्भ, मन्यास्तम्भ, पक्षाघात एवं अन्य सभी वात विकारों में लाभकारी।	1–2 गोली दिन में 2 बार उष्ण जल के साथ।

क्र.	बार कोड	उत्पाद का नाम	शामिल घटक	रोग जिस पर प्रभावकारी	उपयोग विधि
			शास्त्रोक्त गुग्गुलु		
306	1301	**गोक्षुरादि गुग्गुलु**	गोक्षुर, शुद्ध गुग्गुलु, सोंठ, काली मिर्च, लौंग, पिप्पली त्रिफला, मुस्ता एवं अन्य ।	प्रमेह, मूत्रकृच्छ, मूत्राघात, प्रदर, वातरोग, वातरक्त, शुक्रदोष एवं पथरी में लाभ होता है तथा यह मूत्राशय और मूत्रनली के विकारों को शमन करता है।	2–3 गोली दिन में 2–3 बार जल से।
307	1302	**कैशोर गुग्गुलु**	शुद्ध गुग्गुलु, त्रिफला, गिलोय, सोंठ, काली मिर्च, लौंग, पिप्पली, वायबिडंग, गाय का घी एवं अन्य।	एकदोषज, द्विदोषज और पुराना शुष्क तथा स्त्रावयुक्त घुटनों तक फैला हुआ वातरक्त, घाव, खांसी, कुष्ठ, गुल्म, शोथ, उदररोग, पाण्डु प्रमेह, अग्निमांद्य, विवन्ध, प्रमेह पीड़िका आदि का नाश होता है। वायु व रक्तविकार संबंधी रोग नष्ट होता है।	2 से 3 गोली दिन में दो बार दूध या रोगानुसार अनुपान के साथ।
308	1303	**कांचनार गुग्गुलु**	कांचनार छाल, सोंठ, पिप्पली, काली मिर्च, त्रिफला, वरूण छाल, तेजपत्र, दालचीनी, शुद्ध गुगुलु एवं अन्य ।	गलगण्ड, गण्डमाला, शोथ (थायराइड), अपच, ग्रन्थि, गले में और नाक के भीतर गांठे बढ़ना, कुष्ठ व भगन्दर आदि रोग।	2–3 गोली सुबह–शाम जल से।
309	1304	लाक्षादि गुग्गुलु	लाख, हरसिंगार, अर्जुन छाल, अश्वगंधा, बलामूल, शुद्ध गुगुलु एवं अन्य ।	अस्थि भग्न, संधि वात, हृदय विकार, हड्डी संबंधी विकार में लाभकारी।	2–3 गोली दिन में 2–3 बार जल या दूध से।
310	1305	**महायोगराज गुग्गुलु**	सोंठ, पिप्पली, चव्य, पीपरामूल, हींग, चित्रकमूल छाल, अजवाइन, पीली सरसों, जीरा, रेनुका, इन्द्रजौं, पाठा, वायबिडंग, अतीस, गजपीपली, कुटकी, मुरवा, वच, हरड़, बहेडा, आंवला, गिलोय, दशमूल, नाग भस्म, लोह भस्म, अभ्रक भस्म, मंडूर भस्म, रस सिंदूर एवं अन्य।	वातव्याधि, आमवात, पक्षाघात, संधिवात, वातरक्त, श्वांस, खांसी शोथहर, शूलहर एवं सभी प्रकार के रोगों में हितकारी।	2–3 गोली सुबह–शाम अनुपान समस्त रोगों के भेदानुसार।
311	1306	पंचतिक्तघृत गुग्गुलु	नीम छाल, गिलोय, वासा, पटोलपत्र, कटेली, शुद्ध गुगुलु, पाठा, वायविडंग, देवदारू, गजपीपली, सोंठ, हल्दी, चव्य, कुट्ज, मालकांगनी, काली मिर्च, इन्द्रजौ, जीरा, चित्रक, कुटकी, शुद्ध भिलावा, बचा, पीपलामूल, मंजिष्ठ, अतीस, त्रिफला, अजवाईन, गाय का घी एवं अन्य।	विष दोष, वातरोग, कुष्ठ, नाड़ीव्रण, गण्डमाला, अर्श, प्रमेह, हृदय रोग, पाण्डु रोग, वातरक्त को नष्ट करता है। रक्तशोधक व रक्तवर्धक है।	2–4 गोली दिन में 2–3 बार जल से।
312	1307	**पुनर्नवा गुग्गुलु**	पुनर्नवामूल, एरण्ड, सौंठ, शुद्ध गुग्गुलु, एरण्ड तेल, गुडुची, हरड़, बेहड़ा, आंवला, सौंठ, कालीमिर्च, पिप्पली, चित्रक, वायबिडंग एवं अन्य।	वातरक्त, गृध्रसी, वृद्धिरोग, आमवात, जानूग्रह, वस्तिगतशूल शोथ आदि रोगों में प्रभावकारी।	2–3 गोली दिन में 2–3 बार जल या पुनर्नवा क्वाथ के साथ।

क्र.	बार कोड	उत्पाद का नाम	शामिल घटक	रोग जिस पर प्रभावकारी	उपयोग विधि
313	1308	रास्नादि गुग्गुलु	रास्ना, गिलोय, एरण्डमूल, देवदारू, सोंठ, शुद्ध गुगुलु एवं अन्य।	आमवात, गृध्रसी (सायटिका), मन्यास्तम्भ, कर्णरोग, शिरोरोग, नाड़ीव्रण, गठिया, नासूर और भगंदर आदि।	2–3 गोली सुबह व शाम गर्म जल/दशमूल क्वाथ के साथ।
314	1309	**सिंहनाद गुग्गुलु**	त्रिफला क्वाथ, शुद्ध गंधक, एरण्ड तेल एवं अन्य।	आमपाचक, आमवात, पित्त–कफ से होने वाली व्याधियां, कुष्ठ, वातरक्त, उदरविकार आदि में उपयेागी।	2 से 4 गोली दिन में 2 बार जल से।
315	1310	त्रयोदशांग गुग्गुलु	बबूल, अश्वगंधा, हउबेर, गिलोय, शतावरी, गोखरू, देवदारू, रास्ना पत्ती, सौंफ, कपूरकचरी, यवानी, सौंठ, गुग्गुलु, घृत एवं अन्य।	कटिग्रह, गृध्रसी, हनुग्रह, बाहुशूल, जानू स्तम्भ, वात–कफ रोग, योनिदोष, अस्थिभग्न आदि रोगों में उपयोगी।	1–2 गोली दिन में 2 बार जल से।
316	1311	**त्रिफला गुग्गुलु**	हरड, बहेडा, आंवला, पिप्पली, शुद्ध गुगुलु, घी एवं अन्य।	समस्त प्रकार के वातजशूल, भगंदर, शोथ, बवासीर और रक्त विकृति नष्ट होती है, यह उत्तम रेचक, पाचन व वायुनाशक और रक्तशोधक है, वात व कुष्ठ रोगों को नष्ट करता है।	2–3 गोली सुबह–शाम त्रिफला क्वाथ के साथ गुनगुने जल से।
317	1312	योगराज गुग्गुलु	सोंठ, पिप्पली, चव्य, पीपलामूल, चित्रक, भुनी हींग, अजमोद, सरसो, जीरा, निर्गुन्डी, इन्द्रजौ, पाठा, गजपीपली, कुटकी, अतीस, भारगी, बच, मुर्वा, त्रिफला, शुद्ध गुगुलु व अन्य	वातरोग, कुष्ठ, अर्श, प्रमेह, वातरक्त, नाड़ी व्रण, गठिया, नासूर आदि सभी रोगों को ठीक करता है।	2–3 गोली दिन में दो बार अनुपान भेदानुसार (वात रोगों मे रास्नादि क्वाथ के साथ)
			शास्त्रोक्त लौह/मण्डूर/भस्म/पिष्टी		
318	1401	**गोदन्ती भस्म**	शोधित गोदंती	ज्वर, सिरदर्द, सूखी खांसी एवं समस्त पित्तज विकारों में लाभकारी।	125 से 250 मि.ग्रा. मिश्री या शहद के साथ दिन में दो बार।
319	1402	जहरमोहरा पिष्टी	जहर मोहरा को गुलाब जल से शोधन ।	हृदय, मस्तिष्क को बल देने वाली, पित्त नाशक, दाह, यकृत विकार में हितकारी।	चिकित्सक के परामर्शासार।
320	1403	लौह भस्म	शुद्ध लौह	रक्तअल्पता, ज्वर, सामान्य कमजोरी, लीवर रोग, शोथ, कामला, पाण्डु आदि रोगों में अत्यन्त लाभकारी।	125 से 250 मि.ग्रा. दूध या शहद के साथ।
321	1404	**मण्डूर भस्म**	शुद्ध मंडूर	पीलिया, शोथ, कामला, पाण्डु, संग्रहणी, रक्तअल्पता आदि में लाभकारी।	125 से 250 मि.ग्रा. शहद के साथ दिन में दो बार।
322	1405	नवायस लौह	सोंठ, मिर्च, पिप्पली, हरड, बहेड़ा, आंवला, नागरमोथा, वायबिडंग, चित्रक, लौह भस्म एवं अन्य।	प्लीहा, बवासीर, पाण्डु, कामला, कुष्ठरोग, हृदय विकार, रसायन और रक्तवर्धक, उदर विकार को ठीक करता है।	1–2 गोली शहद, शक्कर, घी के साथ सुबह–शाम।

क्र.	बार कोड	उत्पाद का नाम	शामिल घटक	रोग जिस पर प्रभावकारी	उपयोग विधि
323	1406	प्रदरान्तक लौह	शुद्ध लौह भस्म, शुद्ध ताम्र भस्म, शुद्ध हरताल, बंगभस्म, अभ्रक भस्म, कौडी भस्म, त्रिफला, त्रिकटु, चित्रक, वायबिडंग, सेंधा नमक, समुद्री नमक, बिड नमक, सोचर नमक, रेह नमक, चव्य, पिप्पली, शंख भस्म, वचा, कुष्ठ, कचूर, पाठा, देवदारू एवं अन्य।	रक्त प्रदर, श्वेत प्रदर, स्त्रीरोग विकार, पीलिया, अस्थमा, भूख न लगना, मूत्राशय विकार में लाभकारी है।	1–2 गोली शहद, शक्कर, घी के साथ या पंचवल्कल कषाय से।
324	1407	**पुनर्नवादि मण्डूर**	पुर्ननवा, निशोथ, त्रिकटु, वायविडंग, चित्रक, पोखरमूल, हल्दी, दारूहल्दी, दंतीमूल, त्रिफला, चव्य, इन्द्रजौ, कुटकी, पीपरामूल, नागरमोथा व शोधित मंडूर भस्म एवं अन्य।	शोथहर, कामला एवं पाण्डु, आंत को मजबूती देता है। कृमिनाशक, उदर विकृति, रक्तअल्पता में लाभकारी।	1–2 गोली दिन में दो बार, शोथ हेतु गौमूत्र के साथ, पीलिया में पुनर्नवा स्वरस के साथ, उदर विकार में त्रिफला क्वाथ के साथ।
325	1408	सप्तामृत लौह	मुलैठी, हरीतिकी, बहेडा, आंवला, शोधित लौह भस्म एवं अन्य।	सभी प्रकार के नेत्ररोगों की उत्तम औषधि है, रक्त विकार, ज्वर, अम्लपित्त एवं पाचन संस्थान संबंधी रोगों में लाभकारी।	1–2 गोली दिन में दो बार शहद या दूध या घी के साथ भोजन के बाद।
326	1409	सर्वज्वरहर लौह	चित्रक, त्रिफला, त्रिकटु, विडंग, कुटकी, नागरमोथा, गजपीपल, पिपलीमूल, उशीर देवदारू, चिरायता, हाउबेर, कंठकारी, सहजन, मुलेठी, कुटज, लौह भस्म।	ज्वर, प्लीहा रोग, यकृत रोग, हृदय रोग सभी प्रकार के जीर्ण ज्वर की उत्तम औषधि है।	1–2 गोली दिन में दो बार शहद अथवा गुड़ची सत्व के साथ।
327	1410	शिलाजित्वादि लौह	शुद्ध शिलाजीत, पिप्पली, सौंठ, काली मिर्च, शहद, शुद्ध स्वर्णमाक्षिक भस्म, शुद्ध लौह भस्म एवं अन्य।	रक्तक्षय, बल्य, प्रमेह सामान्य कमजोरी आदि पर लाभकारी।	1–3 गोली दिन में दो बार शहद या दूध के साथ।
328	1411	**स्वर्णमाक्षिक भस्म**	स्वर्णमाक्षिक	पीलिया, पित्तविकार, विषमज्वर, पाण्डु, कामला, कुष्ठ, प्रमेह में उपयोगी।	125 से 250 मि.ग्रा. गिलोय घनसत्व या शहद के साथ।
329	1412	टंकण भस्म	शुद्ध टंकण	कास–श्वास, ज्वर, कफघ्न उत्तम कफ निःसारक एवं इसका श्वसन संस्थान पर अत्यन्त उपयोगी प्रभाव है।	125 से 250 मि.ग्रा. शहद के साथ।
330	1413	विडंगादि लौह	विडंग, शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक, मरिच, जातिफल, जायफल, लौंग, सौंठ, शुद्ध टंकण, पिप्पली, शुद्ध हरतल, लौह भस्म आदि।	अग्निमांद्य, अरूचि, शूल, विसूचिका, अर्श, कृमि, शोथ, ज्वर, हिक्का, कास श्वास आदि रोगों में उपयोगी।	1–2 गोली दिन में दो बार शहद से।

क्र.	बार कोड	उत्पाद का नाम	शामिल घटक	रोग जिस पर प्रभावकारी	उपयोग विधि
			शास्त्रोक्त पर्पटी		
331	1501	पंचामृत पर्पटी	शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक, शुद्ध लौह शुद्ध भस्म, शुद्ध अभ्रक भस्म, शुद्ध ताम्र भस्म।	गृहणी, अर्श, छर्दी, अतिसार, ज्वर, अरूचि, अग्निमांद्य सभी पाचन संबंधी रोगों में लाभकारी।	125–250 मि.ग्रा. दिन में दो बार शहद व घी के साथ।
332	1502	**श्वेत पर्पटी**	कलमी शोरा, फिटकरी, नौसादर।	अम्ल पित्त, अश्मरी, मूत्र–कृच्छ, मूत्रग्रह एवं सभी प्रकार के मूत्रवह संस्थान संबंधी रोगों में लाभकारी।	500 मि.ग्रा – 1 ग्राम दिन में दो बार पानी या नारियल के पानी के साथ।
			शास्त्रोक्त अवलेह /पाक		
333	1601	अश्वगंधादि लेह	शर्करा, अश्वगंधा, सारिवा, श्वेत जीरा, मधुरनूही, द्राक्षा, घृत, शहद, एला आदि।	बल्य, रसायन, रक्त विकार, अर्श, उपदंश आदि रोगों में लाभकारी।	1–2 चम्मच दूध के साथ दिन में दो बार।
334	1602	बिल्वादि लेह	बिल्व, गुड़, नागरमोथा, धनिया, श्वेत जीरा, त्रिकटु, नागकेशर, दालचीनी आदि।	अरूचि, अग्निमंद, छर्दि, प्रसेक आदि रोगों में उपयोगी।	1–2 चम्मच पानी के साथ दिन में दो बार।
335	1603	च्यवनप्राश	आंवला, पिप्पली, बला, बेल, अग्निमंथ, गम्भारी, पाटला, बला, शालपर्णी, पृष्ठपर्णी, गोखरू, कंटकारी, गिलोय, गुडुची, मुनक्का, जीवंती, पुष्करमूल, हरड., नागरमोथा, पुनर्नवा, मैदा, इलायची, सफेद चंदन, वासा, दालचीनी, तेजपत्र, नागकेशर, शहद एवं अन्य।	कास–श्वास, राजयक्ष्मा, जरा, शुक्रदोष, अग्निमांद्य, ज्वर, मेद्य, स्मृतिप्रदा एवं रसायन रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में सहायक, संक्रमण रोकने में सहायक।	1/2–1 चम्मच दिन में दो बार दूध के साथ।
336	1604	हरिद्रा खण्ड	हल्दी, शक्कर, घी, सोंठ, कालीमिर्च, दालचीनी, लौंग, वायविडंग, त्रिफला, नागकेशर, नागरमोथा, शुद्ध लौह भस्म, निशोथ व अन्य।	शीतपित्त, चकत्ते, त्वचा रोग, ज्वर, श्वास–कास रोग प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धिकारक।	3 से 6 ग्राम गुनगुने दूध के साथ।
337	1605	सौभाग्य शुण्ठी पाक	सौंठ, शतावर, विदारीकंद, सफेद मुसली, गोखरू, बला, गिलोय सत्व, दालचीनी, छोटी इलायची, तेजपत्र, तालिस पत्र एवं अन्य।	उत्तम पुष्टिकारक, अत्यन्त वृष्य और रसायन योनिविकार, प्रदर, कष्टार्तव, बल वीर्यवर्द्धक है।	3 से 6 ग्राम गुनगुने दूध के साथ भोजन उपरांत।
338	1606	**सुपारी पाक**	सुपारी, कपूर, तेजपत्र, नागरमोथा, पुदीना, पिप्पली, खुरासानी अजवाइन, छोटी इलायची, तालिसपत्र, वंशलोचन, जावित्री, स्वेत चंदन, कालीमिर्च, जायफल, सफेद जीरा, लौंग, धनिया, पिपलामूल, सूखा सिंघाडा, शतावर, शिरनी के बीज, मुनक्का एवं अन्य।	बाजीकरण, पुष्टिकारक, श्वेत प्रदर, रक्त प्रदर, शुक्रमेह, दुर्बलता, कमर दर्द, पीठ, दर्द, गर्भाशय पुष्टिकारक है।	3 से 6 ग्राम गुनगुने दूध के साथ भोजन उपरांत।

क्र.	बार कोड	उत्पाद का नाम	शामिल घटक	रोग जिस पर प्रभावकारी	उपयोग विधि
			शहद		
339	1701	**विन्ध्य हर्बल शहद**	जंगल का शहद	शहद शीतल, हल्का, मधुर, ग्राही, नेत्रों के लिए हितकारी, अग्निदीपन, स्वर को उत्तम करने वाला, व्रण शोधक, सुकुमारता लाने वाला, कसैले रस वाला, बुद्धिकारक, और मेद, तृष्णा, वमन, श्वास, हिचकी, अतिसार, खांसी, पित्त, रक्तविकार, कफ, प्रमेह, ग्लानि, कृमि, दाह, क्षत आदि में उपयोगी।	2–3 चम्मच शहद का सेवन ठण्डे जल या ठण्डे दूध के साथ (जैसी जरूरत हो) करें।
			विन्ध्य हर्बल्स पेटेंट वेटनरी चूर्ण/क्रीम/टेबलेट		
340	1801	**एण्टी डायरो वेट चूर्ण**	बरगद छाल, पीपल छाल, गुलर छाल, भारंगी, विजयसार, धावईफूल, हरड़, बेहड़ा, आंवला, हल्दी, सौंठ, शुद्ध गुग्गुलु, अर्जुन छाल, कपूर एवं कुटजछाल।	अतिसार, रक्तातिसार, उदरशूल, ऋतुजन्य	गाय/भैंस/घोड़ा– 50 ग्राम. भेड़/बकरी– 15 ग्राम ऊंट– 100 ग्राम. पशुओं हेतु।
341	1802	कफ वेट चूर्ण	सौंठ, कालीमिर्च, पिप्पली, भारंगी, अडूसा, गिलोय, शुद्ध टंकण, मुलेठी, तुलसी एवं हल्दी।	श्वांस–कास, ज्वर, अरूचि एवं अग्निमांद्य।	गाय/भैंस/घोड़ा– 50 ग्राम. भेड़/बकरी– 15 ग्राम ऊंट– 100 ग्राम.
342	1803	**डायजेस्टो वेट चूर्ण**	त्रिफला, त्रिकटु, वायबिडंग, नागरमोथा, बेल, जीरा, अजवाइन, अजमोद, सेंधा नमक, बिड नमक, वच, धनिया, इंद्र जौ, कुटज छाल, हींग, गिलोय, अमलतास गूदा, भृंगराज, सनायपत्ती, सौंफ, चक्रमर्द चूर्ण, चित्रकमूल, शतावरी, गन्ने के जड़।	अरूचि, अग्निमांद्य, कुपचन, गैस।	गाय/भैंस/घोड़ा– 50 ग्राम. भेड़/बकरी– 15 ग्राम ऊंट– 100 ग्राम.
343	1804	डर्मो वेट क्रीम	नीम तल, करंज तल, जत्यादि तेल, हरताल एवं मोम।	त्वचारोग, कुष्ठ, एग्जिमा, खुर के घाव एवं अन्य घाव।	प्रभावित जगह को नीम पत्र और करंज पत्र के काढ़े से धोकर बाह्य उपयोग करें।
344	1805	हिंग्वाष्टक वेट चूर्ण	सौंठ, कालीमिर्च, पीपल, काला जीरा, सफेद जीरा, हींग, अजमोद एवं सेंधा नमक।	अरूचि, उदरशूल, पाचन संबंधी रोग।	गाय/भैंस/घोड़ा– 50 ग्राम भेड़/बकरी– 15 ग्राम ऊंट–100 ग्राम.
345	1806	लेक्टो वेट चूर्ण	अश्वगंधा, शतावरी, विदारीकंद, तिल्ली, सौंठ, बेल, मुलेठी, उड़द दाल, बला, गोखरू।	यह सामान्यतः पशुओं के आहार के साथ मिलाकर खिलाने से दूध की मात्रा बढ़ती है। गर्भवती गाय को चूर्ण खिलाने पर बहुत लाभदायक है।	गाय/भैंस/घोड़ा– 50 ग्राम. भेड़/बकरी– 15 ग्राम ऊंट– 100 ग्राम.

क्र.	बार कोड	उत्पाद का नाम	शामिल घटक	रोग जिस पर प्रभावकारी	उपयोग विधि
348	1809	यूरिनो वेट टेबलेट	कपूर, वच, नागरमोथा, चिरायता, गिलोय, देवदारू, हल्दी, अतीस, दारूहल्दी, पिप्पलीमूल, चित्रकमूल, धनिया, त्रिफला, चव्य, वायबिडंग, गजपिप्पली, सौंठ, कालीमिर्च, पिप्पली, सज्जीसार, सेंधा नमक, काला नमक, निसोथ, दंतीमूल, तेजपत्र, दालचीनी, छोटी इलायची, वंशलोचन, शुद्ध शिलाजीत, शुद्ध गुग्गुलु, गोक्षुर।	बहुमूत्रता, मूत्राघात, दूर्बलता, पेशाब में जलन, अरूचि,	गाय/भैंस/घोड़ा – 50 ग्राम. भेड़/बकरी – 15 ग्राम, ऊंट – 100 ग्राम.
346	1807	सेप्टो वेट चूर्ण	शुद्ध गंधक, नीम पंचांग, पलाश बीज, करंज बीज, विडंग, धायफूल, हरड़, कुटकी, काला जीरा, सनायपत्ती, हिंगोट, अजवाइन एवं सोंफ।	ज्वर, मूत्र में जलन, या मूत्र का रंग बदलना। श्वास–कास रोगप्रति रोधक क्षमता बढ़ाती है और कृमिनाशक।	गाय/भैंस/घोड़ा – 50 ग्राम. भेड़/बकरी – 15 ग्राम, ऊंट – 100 ग्राम.
347	1808	शतावरी वेट चूर्ण	शतावरी चूर्ण।	सामान्य पौष्टिक, जानवरों को लगातार देने से प्रजनन अंग स्वस्थ होते हैं, कमजोरी तथा दूध की मात्रा को बढ़ाते हैं।	गाय/भैंस/घोड़ा– 50 ग्राम. भेड़/बकरी– 15 ग्राम, ऊंट – 100 ग्राम.

vk;qosZn D;k g\

v;fgrkfgra 0;k/kfunkua 'keua rFkkA
fo|r ;= fo}kf)% l vk;qosZn mP;rAA
vFkZ

ftl 'kkL= esa vk;q vFkkZr voLFkk d fy; fgrdkjd vkSj vfgrdkjd inkFkksZ dk mYys[k gks vkSj jksxks d funku vFkkZr mRifRr gksu dk i/kku dkj.k vkSj mudh 'kkfUr dk mik; vFkkZr fpfdRlk dk o.kZu fd;k x;k gks rks fo}kuksa ykx mls vk;qosZn dgrs gSA

LoLFk thou dk mik;

ώφ¨ ;Nϱή

fujksxh thou dh dkeuk djus okys cf)eku o LoLFk 0;fDr }kjk ifrfnu fd;s tkuoky vkpj.k dk fnup;kZ dgrs gSA LoLF; fnup;kZ dN bl idkj gksuh pkfg,%&

cã egrZ esa mBuk ¼le; ikr% 4-30 cts ls 6-00 cts rd½ iFoh dks i.kke djrs ea ik= esa j[kk tys ihuk o viu b"V no dk Lej.k djukA fQj nfud fØ;k ls fuor gksdj 2 ls 3 fd-eh- ifrfnu [kys gok esa iny pyuk LokLF;dj gSA lcg uhe] rysl] inhuk iRrh dh 2 ls 3 ifRr;k tys ls yu ij ân; jksxh] e/kegh] mPp jDrpki o vU; [krjukd chekfj;ksa e dkQh ykHk gkrk gSA cy i= Hkh e/keg jkfx;ks d fy, fgrdkjh gSA

10 ls 15 fefuV fu;fer :i ls ;kx ,o ik.kk;ke djrs jfRk rRi'pkr xuxus ikuh ls Luku ykHkin gkrk gSA lcg 8 ls 9 cts d chp Hkjiwj ikf"Vd uk'rk dj] ble vdfjr puk] ex] xgs o iihrk dk i;kx ifrfnu djA 12 ls 1 cts d chp nkigj dk Hkkstu yo ftles gjh lCth] lykn] nkyk dk i;kx leko'k jgA lk;a 4 ls 5 cts d chp ,d fxykl ekSleh Qy tl vFkok ekSleh Qyks dk lsou fgrdkjh jgxkA 'kke dks 6 ls 7 cts d chp lfo/kk vuqlkj 1 ls 2 fd-eh- iny pyuk LokLF;o/kd jgxkA

8 cts ls 9 cts d chp jkf= esa gYdk Hkkstu yo] ftles fpdukbZ] ryh gbZ oLrq, rFkk fepZ dk i;kx de ls de gksA lksu ,o jkf= Hkkstu d chp de ls de 2&3 ?k.V dk vrjky gksuk vko';d gSA ifrfnu 8 ls 10 yhVj ikuh ihuk vko';d gSA 10 ls 11 cts jkf= d chp ij /kkdj ,o lHkh fprkvk dk NkMdj lksu tkuk pkfg,] bl ls funk lgh vkrh gSA

fo'k"k lko/kkfu;k

Hkkstu &

Hkkstu dk doy 1@3 Hkkx gh vUu vkSj nky gkuh pkfg;] ckdh 2@3 Hkkx gjh lCthA 20 ifr'kr idk;s g;s vUu d lkFk 80 ifr'kr viDo vUu yA

de@lhfer djs &

ued] phuh] fepZ] eSnk] nky] ?kh] vkbl Øhe] vkSy vkfnA Åph ,Mh dh pIiy] tr] Vh-oh- o flusek] ekVikik o Fkdkus nus okys 0;k;ke lcpA

vkjke &

nkuks le; [kkus d ckn 10 ls 15 feuV otkklu esa cBA lksus ls igys viuh lkjh fprkvk ls eDr gksdj 'kkfUrfpRr gks tk;A viuh ckrh djoV rFkk iV d cy ¼f'k'kq vklu e½ lksu dh vknr MkyA

nj djsa@jgs &

/kweiku] pk;] dkQh] 'kjkc] nokb o vU; cjh vknrA enks o ikfy'k fd;s g,] pkoy] ekSlkgkj] fMCck cUn] lq[kk;s g,] feykoVh] jx;Dr] lx/k;Dr] flUFkfVd] df=e HkkstuA Hkkstu d vk/kk ?k.V igys rFkk ,d ?k.V ckn gh ikuh fi;A

nkrks dk LokLF; &

Hkkstu d ckn nkrk dk ikuh ls vPNh rjg ls dYyk djd lkQ dj yA lcg vkSj jkf= nkuks le; nkrk dk VFkiLV@fcoV/; n'kuls Ldkj nkUretu ls lkQ djA

ifrfnu dN dMh oLrq, tl xktj] eyh] ukfj;y] HkVV] lkQ] fry vkfn pck&pck dj [kk,A nkrks e iys vkrk gks ;k ik;fj;k gks rks lcg] nkigj o 'kke uhe dh nkru&nkru ifRr;k pckA

vknr MkysS &

fnu e ,d ckj ued d xuxus ikuh ls xjkjs djukA lcg o lk; f=Qyk d ikuh ls vk[kk dk /kkukA bl ls u= T;kfr c<+xhA

ifrfnu eg d rky dh gkFk d vxBs ls /khj&/khj ekfy'k djA eg e ikuh Hkjdj pgjs o vk[kk ij ikuh d Nikds ekj ,o dN le; gyus o xkus e vo'; fcrk,A

tqj &

xgjh lkl yus rFkk ge'kk lh/k rudj cBs ;k pyA fnu e nks ckj 'kkp tku ,o nks ckj Luku djus dh vknr MkyA Luku djus d ckn igys gkFkks ls ekfy'k djd ftruk ikuh ls[kk lds ls[kk yA fQj rkfy, ls iksNA

ls)kfUrd ckrs &

vf/kd nok, yuk chekjh ls T;knk [krjukd gS] tYnckth] fprk ,o xfj"B o pViVk Hkkstu chekjh dk e[; dkj.k gSA

lq[kh thou ds fy;s &

[kq'k jgks] [kf'k;ka ckVksA
;kn jgs] tks nxs ogh feyxkA

ges'kk lS tx jgs &

viu dRrO; d ifr] viu nk"kk d ifr] viuh xyrh :ih bPNkvk d ifr] viu ey Lo:i d ifr] l[k oLrq fo'k"k e ugha] lUrq"V jgus e gSA egRokdka{kk lHkh e gkrh gS] ijUr vfr egRokdka{kh gkuk vlUrks"k dk tUe nrk gSA fu"dke de djus dh vknr Mky] ;g lq[kh thou dh dath gSA tks Hkh gkxk mlds jgrs ls gkxk] fQj fpfUrr gksu dk D;k i;kstu gSA

vPNh lgr d fy, t:jh gs i;kIr uhn &

vk/kfud ifjos'k e vf/kdk'k ykxks dks uhn u vkuk ,d vke f'kdk;r gks xbZ gSA

uhn dh xkfy;ka ,o fdlh Hkh idkj d u'k d lou dk vFkZ g vU; tfVy chekfj;ka dk fue=.k nukA bl ls fdMuh] ân;] ,o vU; egRoi.kZ vx iHkkfor gkr gSA

ik;% ekufld ruko] fprk, gh lkekU;r% vfunk dk dkj.k gSA vfunk ls ihfNr NMku dk lh/kk mik; g&vkRe ls>ko ;kuh viu vki ls ;g ckj&ckj vkSj tkj ls dfg, fd vkt jkr eq cgr tYnh lks tkÅxkA

jkf= Hkkstu ,o lksu d chp 2&3 ?k.V dk vUrjky vko';d g] ,o lksu ls io gkFk&iSj vkSj pgjk ikuh ls /kks y] nkr lkQ dj ,o lHkh fpUrkvk dks Hkwy tko rFkk dk;y; e dk; djus okys 0;fDr dk;ky;hu leL;kvk dks dk;ky; e gh NkM tkoA fdlh Hkh gkyr e mls ;kn u djA

i;kIr uhn vPNs LokLF; dk lpd g] lk/kkj.kr 6 ls 8 ?kV fu;fer :i ls lkuk pkfg,A

---

foi.kudrk ¼**Marketed by)-**
e/;in'k jkT; y?kq oukit lgdkjh l?k, [ky ifjlj] bfnjk fudst] 74 cxy] Hkksiky&462003

fuek.kdrk ¼**Manufactured by)**
y?kq oukit iLLdj.k ,o vul/kku dUnz cj[kMk iBkuh] Hkksiky&462021